श्रीमद्भगवद्गीता की यथावत सुबोध व्याख्या

भाग- १
कक्षा १ से ५ तक

बाल गीता

विश्व के सभी विद्यार्थियों के लिये

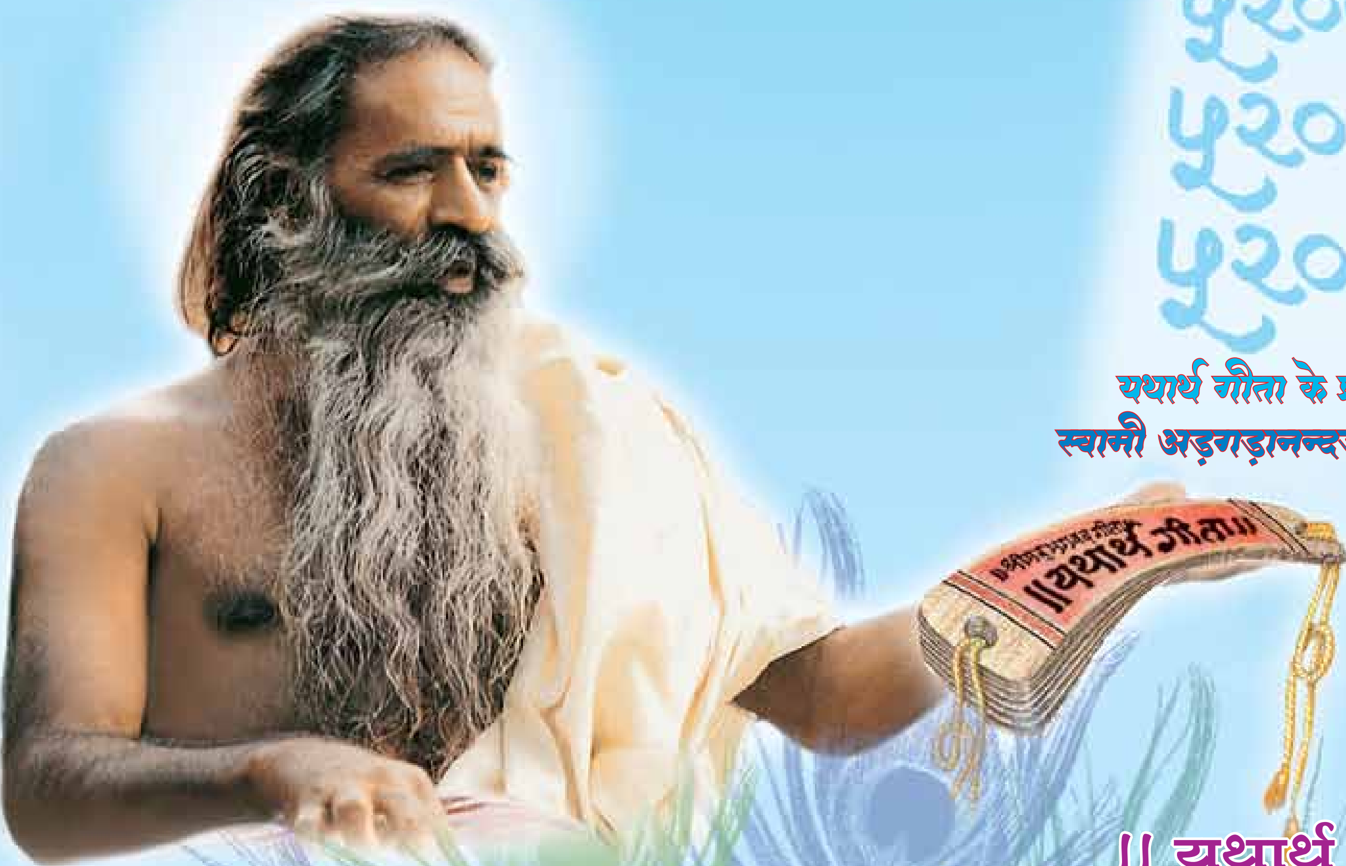

यथार्थ गीता के प्रणेता-
स्वामी अड़गड़ानन्दजी महाराज

॥ यथार्थ गीता ॥
मानवमात्र का एकमात्र धर्मशास्त्र

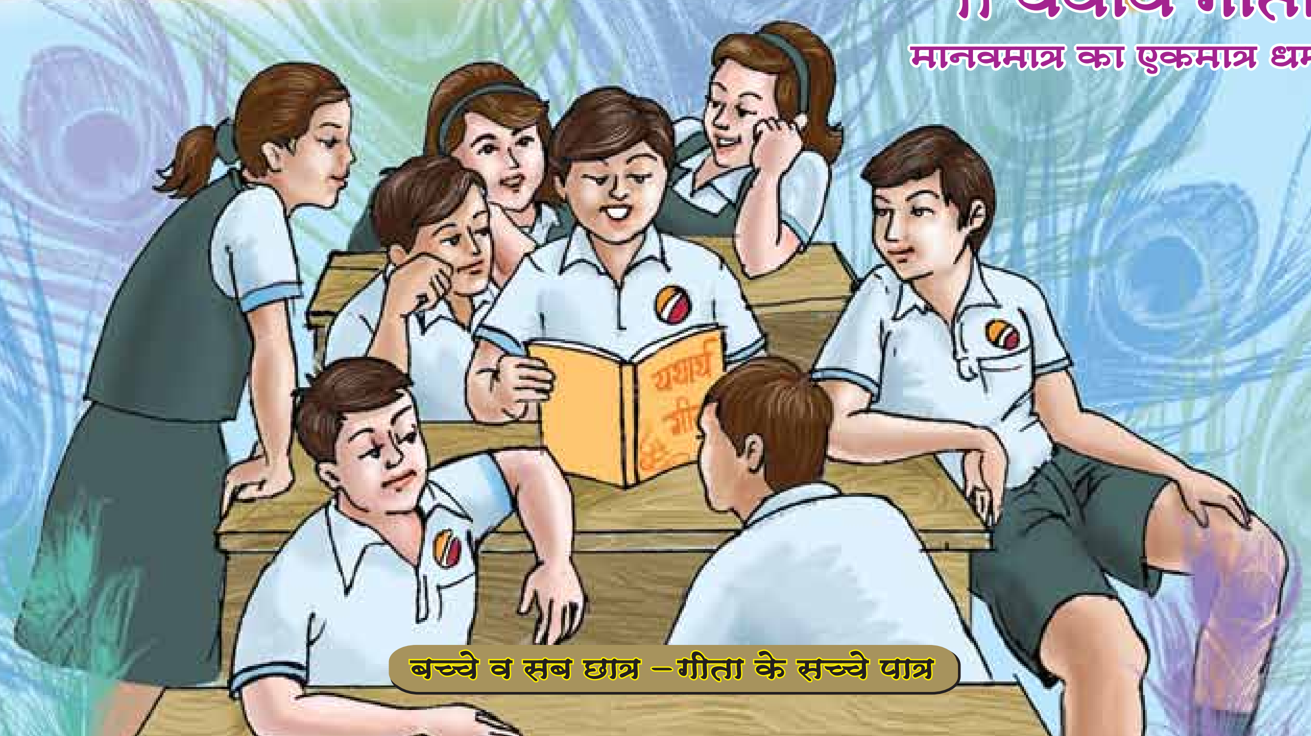

बच्चे व सब छात्र –गीता के सच्चे पात्र

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार

मूल्य – रु. ५५.००/- मात्र

।। ॐ श्री सद्‌गुरुदेवाय नमः ।।

भाग– १
कक्षा १ से ५ तक

बाल गीता

विश्व के सभी विद्यार्थियों के लिये

बच्चों के संस्कारवर्द्धन हेतु

पूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी महाराज

के श्रीमुख से निःसृत

शिक्षाप्रद अमृतवाणियों का संकलन

*** बच्चे व सब छात्र – गीता के सच्चे पात्र ***

ॐ

प्रकाशक :

श्री परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्दजी आश्रम ट्रस्ट

5, New Apollo Estate, Mogra Lane, Opp.
Nagardas Road, Andheri (East), Mumbai – 400069 India

प्रकाशकीय निवेदन

श्री गुरु पूर्णिमा पर्व, वर्ष १९८३ में ईश्वरीय प्रेरणा से प्रकट 'यथार्थ गीता' को केवल भारत ही नहीं वरन् पूरा विश्व स्वीकार कर रहा है। करोड़ों लोग इस यथार्थ ज्ञान से आप्लावित हो रहे हैं। इसी क्रम में शिक्षकवृन्द, अभिभावकगण और भाविकों के आग्रह पर, पूज्य स्वामी जी की प्रेरणा से विद्यार्थियों के लिये गीता-ज्ञान की इस पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है जो कि भारत ही नहीं, पूरे विश्व के भावी नागरिकों को सम्बोधित है।

वस्तुतः 'गीता' में प्रयुक्त शब्द यौगिक शब्द हैं। उनका अपना एक अभिप्राय है, आकर्षण है। उनको तो बदला नहीं जा सकता; हाँ! उन्हें सरल, सुबोध रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

आशा है, सभी माता-पिता, अभिभावक एवं शिक्षकवृन्द अपने बच्चों एवं विद्यार्थियों को ईश्वरीय गायन 'गीता' से परिचित करायेंगे। उनके प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का समाधान करेंगे, जिससे उनमें श्रेष्ठ संस्कारों का सृजन होगा, उनके पुण्य-पुरुषार्थ में वृद्धि होगी और वे जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे।

आप लोगों से अपेक्षा है कि यह पुस्तिका और 'यथार्थ गीता' प्रत्येक घर, विद्यालय, पुस्तकालय और प्रत्येक विद्यार्थी के बस्ते में होनी चाहिये। वस्तुतः तमाम रूढ़ियों, अन्धविश्वासों एवं पूर्वाग्रहों से मुक्त बच्चे ही गीता के सच्चे पात्र हैं।

इसके लिये आपलोग नियम बनायेंगे कि सब विद्यार्थी –

- प्रतिदिन सुबह या शाम 'यथार्थ गीता' के चार श्लोकों का अर्थसहित सस्वर पाठ करेंगे।
- प्रति सप्ताह एक श्लोक कण्ठस्थ (याद) करेंगे।
- प्रति सप्ताह एक 'गीता अभ्यास पुस्तिका' में तीन श्लोक हाथ से लिखकर लायेंगे।
- प्रति सप्ताह एक घण्टे का 'ज्ञानगोष्ठी' का आयोजन कर 'यथार्थ गीता' के श्लोकों का अर्थसहित सामूहिक सस्वर पाठ और परिचर्चा करेंगे। शिक्षकवृन्द एवं अभिभावकगण उनके जिज्ञासाओं का समाधान करेंगे।

इस पुस्तिका को बच्चों के जन्मोत्सव, मांगलिक आयोजनों और विद्यालयों में मुक्तहस्त वितरित करें। इससे बच्चों का संस्कारवर्द्धन तो होगा ही, साथ ही आपका भी कल्याण होगा।

आपके सभी बच्चों और विद्यार्थियों को प्रकाशकीय शुभकामनाएँ!

–प्रकाशक

सम्बोधन

विश्व का आदि धर्मशास्त्र – श्रीमद्भगवद्गीता

प्रिय बच्चो!८

आप जानना चाहेंगे कि गीता का प्राकट्य कहाँ हुआ! सम्पूर्ण विश्व को एक जैसी शान्ति, समृद्धि, सम्प्रदाय एवं भेदभावमुक्त भ्रातृत्व-स्नेह-सम्मान और परमपद प्रदायिनी 'गीता' की उत्पत्ति भारत में हुई है।

सृष्टि के आरम्भ में, करोड़ों वर्ष पूर्व हिमालय की तपस्थली में भगवान नारायण ने इसे सूर्य से कहा। सूर्य से आदि महाराजा मनु को प्राप्त हुआ। मनु ने इक्ष्वाकु से कहा और इक्ष्वाकु से राजर्षियों ने जाना। इस महत्वपूर्ण काल से यह अविनाशी योग इसी लोक में लुप्त हो चला था। अविनाशी का विनाश तो होता नहीं, स्मृति धूमिल हो गयी थी। जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने द्वापर में महाभारत वर्णित कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अपने सखा-मित्र-शिष्य अर्जुन के प्रति कहा।

बच्चो! काल-क्रम के अन्तराल से वही आदिशास्त्र गीता आज अपने मूल आशय के साथ सुरक्षित आपके समक्ष है, हाथों में है। इस अनुपम, दुर्लभ शास्त्र का जन्म-स्थान भारत ही है। इसलिये यह भारत का राष्ट्रीय दर्शन (ग्रन्थ) और विश्व के मानव-मात्र को सम्बोधित होने से अन्तर्राष्ट्रीय ग्रन्थ है।

अतः अनादिकाल से उस एक परमपिता परमात्मा का दर्शन और उसको धारण कराने के विधि-विधानों से युक्त श्रीमद्भगवद्गीता ही विश्व का आदि धर्मशास्त्र है। जो उन्हीं परमात्मा के श्रीमुख का सीधा प्रसारण है।

सुख, शान्ति, समृद्धि एवं सफलता की साधना गीता!

स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज

विवरण-सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	प्रार्थना	१
२.	वन्दना	२
३.	आशीर्वचन	३
४.	विश्वविश्रुत (विश्वविख्यात) गीता पर विद्वानों के विचार	४
५.	'गीता' और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन	७
६.	'गीता' पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के विचार	८
७.	ज्ञानामृत गीता का प्रादुर्भाव – महाभारत कथा	९
८.	श्रीमद्भगवद्गीता	१५
९.	'गीता' की यथावत् सुबोध हिन्दी व्याख्या 'यथार्थ गीता'	१७
१०.	'यथार्थ गीता' के प्रणेता	१९
११.	'गीता' के प्रमुख सिद्धान्त	२०
१२.	विचार बिन्दु	२२
१३.	विद्यार्थियों के कर्त्तव्य	२४
१४.	गुरु महिमा एवं गुरु-शिष्य परम्परा	२६
१५.	गौरवशाली इतिहास-ग्रन्थ 'महाभारत'	२७
१६.	महाभारत व गीता के शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग–	
	❑ सफलता का सूत्र	३१
	❑ शिक्षा में प्रेरणा और लगन का महत्त्व	३२
	❑ गृहकार्य (होमवर्क) को हृदयंगम करते हुए पूरा करें	३३
	❑ काल्पनिक भूत-प्रेत का अस्तित्व नहीं, तो डर कैसा?	३४
	❑ एक परमात्मा की ही पूजा करनी चाहिये	३५
	❑ स्वार्थ और झूठ का परिणाम	३६

॥ ॐ ॥

ॐ की महिमा

ॐ नाम के साबुन से, जो मन का मैल छुड़ायेगा।
निर्मल मन के मंदिर में, भगवान् का दर्शन पायेगा।।

ओम् के उच्चारण से मन शान्त होता है और शक्ति, साहस, सामर्थ्य का सञ्चार होता है। परमदेव परमात्मा के निकटता की अनुभूति होती है।

- निराशा, असफलता एवं विपत्ति में इष्ट का ध्यान और ॐ का जप करें।

* * *

गीता-महिमा

गीतायाः श्लोकपाठेन गोविन्दस्मृतिकीर्तनात्।
साधुदर्शनामात्रेण तीर्थकोटिफलं लभेत्।।

गीता के श्लोक के पाठ से, भगवान् श्रीकृष्ण के स्मरण और भजन (ओम् के जप) से तथा सन्त के दर्शनमात्र से करोड़ों तीर्थों का फल प्राप्त होता है।

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

॥ ॐ श्री परमात्मने नमः ॥

प्रार्थना

हे प्रभो ! आनन्ददाता !

हे प्रभो! आनन्ददाता! ज्ञान हमको दीजिये ।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिये ॥
लीजिये हमको शरण में, हम सदाचारी बनें ।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें ॥
निन्दा किसी की हम किसी से, भूलकर भी ना करें ।
ईर्ष्या कभी भी हम किसी से, भूलकर भी ना करें ॥
सत्य बोलें झूठ त्यागें, मेल आपस में करें ।
दिव्य जीवन हो हमारा, यश तेरा गाया करें ॥
मातृभूमि पितु-मातु सेवा, हो अधिक प्यारी हमें ।
देश की सेवा करें, निज देश हितकारी बनें ॥
कीजिये हम पर कृपा, ऐसी हे परमात्मा ।
मोह मद मत्सर रहित, होवे हमारी आत्मा ॥
प्रेम से हम गुरुजनों की, नित्य ही सेवा करें ।
प्रेम से परमात्मन्! हम आपका चिन्तन करें ॥
योगविद्या ब्रह्मविद्या, हो अधिक प्यारी हमें ।
ब्रह्मस्थिति प्राप्त करके, सर्वहितकारी बनें ॥

॥ ॐ ॥

।।ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः।।

वन्दना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

अर्थ– तुम ही माता हो, तुम ही पिता हो, तुम ही बन्धु हो, तुम ही सखा हो, तुम ही विद्या हो, तुम ही शक्ति (सामर्थ्य) हो। हे देवों के देव! सद्गुरुदेव! तुम ही मेरे सबकुछ हो।

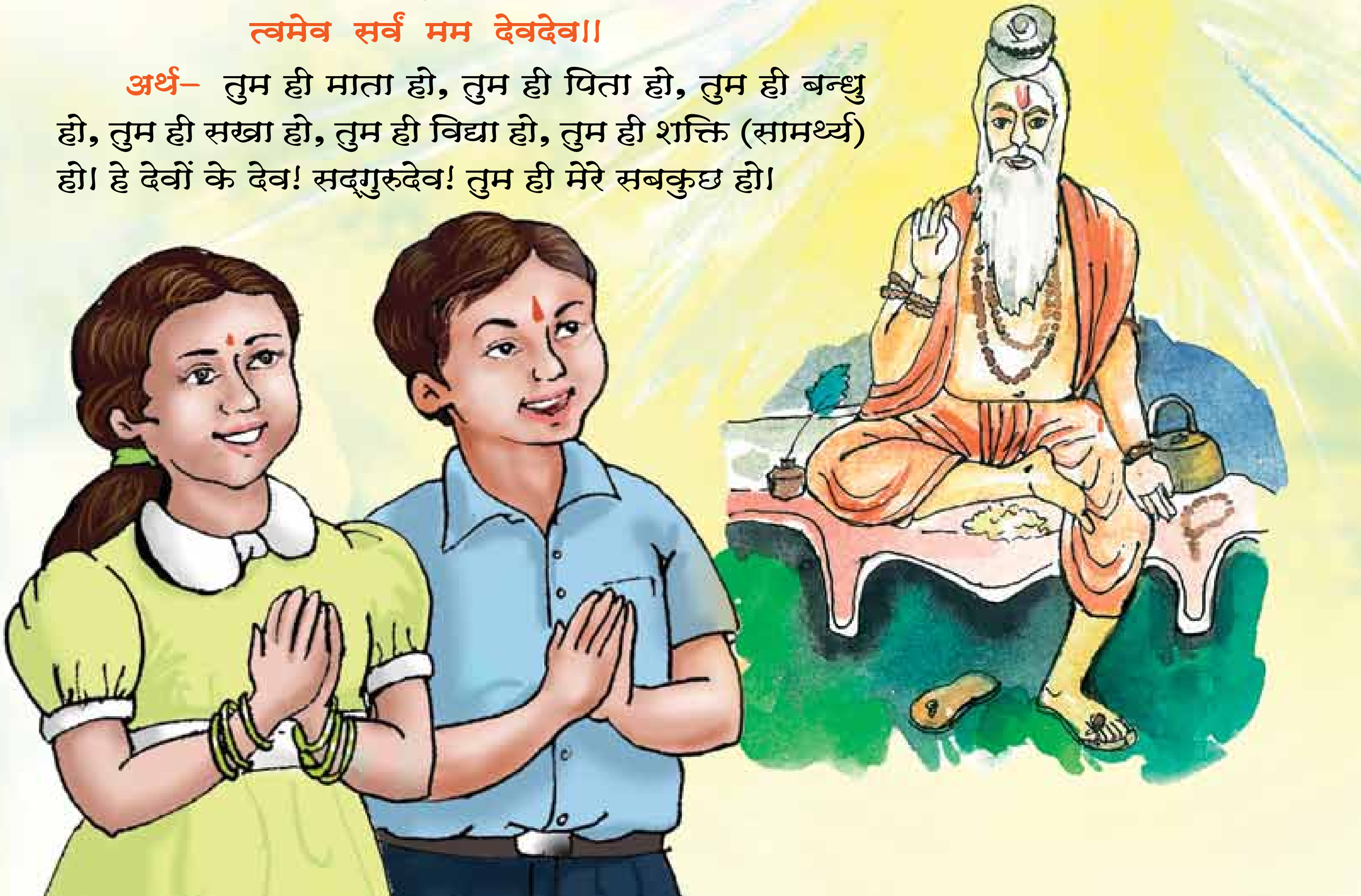

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अर्थ– गुरु ही ब्रह्मा हैं (सृष्टि के रचयिता हैं), गुरु ही विष्णु हैं (विश्व के अणु-अणु, कण-कण में व्याप्त हैं), गुरु ही महेश्वर हैं (महान् ईश्वर, परमात्मा हैं) तथा गुरु ही साक्षात् साकार ब्रह्मस्वरूप हैं अर्थात् इन सबकी उपलब्धि का साधन-माध्यम (जागृति) सद्गुरु से ही है। मैं उन गुरुदेव को नमस्कार करता हूँ।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोर्पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोर्कृपा।।

अर्थ– गुरु के स्वरूप का ही ध्यान, गुरु के श्रीचरणों की पूजा, गुरु के श्रीमुख से निकले हुए वचन ही मन्त्र हैं तथा गुरु की कृपा ही मोक्ष का आधार है।

आशीर्वचन

प्रिय विद्यार्थियो!

आपलोगों के जीवन का यह सबसे महत्त्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक क्षण है कि आप 'गीता' से परिचित होने जा रहे हैं। 'गीता' ज्ञान का सागर है और ईश्वरीय गायन का आदिशास्त्र है। सृष्टि के आदि (प्रारम्भ) में प्रसारित गीताज्ञान विश्व मानवता की सबसे प्रथम एवं प्राचीनतम अमूल्य निधि है।

अनादिकाल से इसने सत्यान्वेषियों (सत्य की खोज में अनुरक्त) एवं जिज्ञासुओं के सभी प्रश्नों का समाधान किया है और आज भी कर रही है। आपलोगों के भी मस्तिष्क में उमड़नेवाले प्रश्न, जैसे– इस सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ? इसका निर्माणकर्त्ता कौन है? मेरे जन्म और जीवन का उद्देश्य क्या है? आदि जीव-जगत्, ब्रह्माण्ड एवं अध्यात्म से सम्बन्धित सभी जिज्ञासाओं व प्रश्नों के उत्तर 'गीता' में हैं।

कालावधि अर्थात् समय के अन्तर से 'गीता' का मूल आशय खो गया था। ५२०० वर्षों बाद योगेश्वर श्रीकृष्ण के आशय को यथावत् (ज्यों-का-त्यों) 'यथार्थ गीता' में प्रस्तुत किया गया है। 'यथार्थ गीता' के प्रसारण से धर्म और धर्म के नाम पर पनपी सभी कुरीतियों, रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों का समाधान करते हुए ईश्वरप्राप्ति के समग्र साधन-विधि को पुनर्प्रकाशित किया गया है।

प्रिय विद्यार्थियो! गीता का अनुसरण एवं अनुशीलन कर आप अपने जीवन के सभी लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे। उपयोगी शिक्षा, अच्छी आजीविका, सुख-समृद्धि, ऐश्वर्य एवं विभूति आपका वरण करेगी और आध्यात्मिक पथ पर क्रमोन्नत उत्थान करते हुए आपको मोक्ष की भी प्राप्ति होगी। आप सभी बच्चों का आश्रम में स्वागत है। विश्व के आप सभी भावी नागरिकों का आह्वान है कि 'यथार्थ गीता' द्वारा विश्वशान्ति एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को साकार करेंगे।

आप सबका जीवन मंगलमय हो!

– स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी

श्री गुरु पूर्णिमा, १८ जुलाई, सन् २००८ ई.
श्री परमहंस आश्रम, ग्रा. व पो.– शक्तेषगढ़,
चुनार – मिर्जापुर (उ. प्र.)

विश्वविश्रुत 'गीता'

विद्यार्थियो!

'गीता'-परिचय से पहले आइये इस विश्वविश्रुत (विश्वप्रसिद्ध) दिव्य ज्ञान पर लोगों के विचारों को जान लिया जाय।

भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं 'गीता' पर विश्व के संत, दार्शनिक और इतिहासकारों के विचार

- भगवद्गीता विश्व की सबसे सुन्दर एवं महान् ज्ञान की दार्शनिक कृति है।

- डब्लू वान हम्बोल्ड (जर्मन विद्वान्)

- पूर्वी जगत् की सभी स्मरणीय वस्तुओं में 'भगवद्गीता' से श्रेष्ठ कोई भी वस्तु नहीं है। 'गीता' के साथ तुलना करने पर जगत् का आधुनिक समस्त ज्ञान मुझे तुच्छ लगता है। मैं नित्य प्रातःकाल अपने हृदय और बुद्धि को गीता-ज्ञान के पवित्र जल से धोया करता हूँ।

- प्राचीन युग की सर्वोत्तम वस्तुओं में 'गीता' से श्रेष्ठ कोई वस्तु नहीं है। 'गीता' में ऐसा उत्तम और सर्वव्यापी ज्ञान है कि उसकी रचना के असंख्य वर्ष हो गये फिर भी ऐसा दूसरा, एक भी ग्रन्थ नहीं लिखा गया है।

- मनीषी थोरी (अमेरिकी दार्शनिक)

- 'गीता' दुनिया की बेहतरीन इल्मी तोहफा है। इस एक किताब में दुनिया के सारे फिरकों का निचोड़ पेश कर दिया गया है।

- अलबेरुनी (अरब के मनीषी)

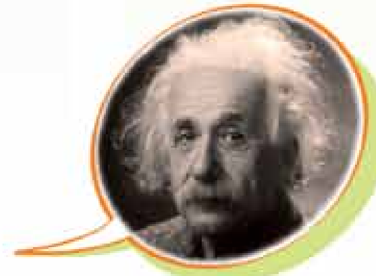

- हम भारतीय दर्शन एवं ज्ञान के हमेश ऋणी रहेंगे। भारत ने ही हमें गिनना सिखाया और शून्य (जीरो) की जानकारी दी। बिना उसके कोई भी वैज्ञानिक खोज न हो पाती।

– अलबर्ट आइन्सटीन (अमेरिकी वैज्ञानिक)

● धर्म के क्षेत्र में अन्य सभी निर्धन हैं जबकि भारत इसमें शिरमौर है।

– मार्क ट्वेन (अमेरिकी विद्वान्)

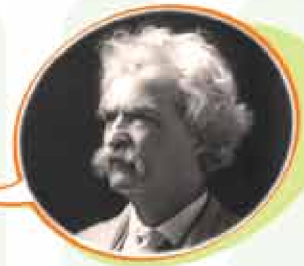

● भारत हमारे मानवमूल की मातृभूमि है और संस्कृत यूरोप के सभी भाषाओं की जननी है। यह हमारे दर्शन, गणित, विज्ञान, स्वराज्य एवं जनतन्त्र की जननी है। इस प्रकार भारत माता (मदर इण्डिया) बहुत तरह से हम सबकी माता है।

– विल डूराण्ट (अमेरिकी इतिहासकार)

● अगर मुझसे पूछा जाय कि इस पृथ्वी पर पूर्ण विकसित मानव ज्ञान कहाँ है? जीवन के सभी गूढ़ प्रश्नों पर गहन चिन्तन कर उसका समाधान खोजा है, तो मैं भारत का नाम लूँगा।

– मैक्स मूलर (जर्मन दार्शनिक)

● जिस मनुष्य ने 'गीता' का थोड़ा-सा भी अध्ययन किया है, वह संसार-बन्धन से मुक्त होकर आत्यन्तिक आनन्द का अधिकारी हो जाता है।

– जगद्गुरु आद्यशङ्कराचार्य

● मैंने यूरोप और एशिया के सभी धर्मों का अध्ययन किया है, परन्तु मुझे उन सबमें हिन्दूधर्म ही सर्वश्रेष्ठ दिखायी देता है। मेरा विश्वास है कि इसके सामने समस्त जगत् को सिर झुकाना पड़ेगा।

– रोमां रोलां (फ्रांसीसी विद्वान्)

● 'गीता' वह गुलदस्ता है जिसमें वेदों और उपनिषदों के सभी आध्यात्मिक ज्ञान-पुष्प सजे हुए हैं।

– स्वामी विवेकानन्द (भारत)

- The Bhagvad Geeta is the most beautiful and profound philosophical work in the world.

- W. Von Humboldt

- In the morning I bathe my intellect in the stupendous and cosmogonal philosophy of the Bhagvad - Geeta, in comparison with which our modern world and its literature seem puny and trivial.

- Henry David Thoreau

- I owed a magnificent day to the Bhagvad-Geeta. It was the first of books; it was as if an empire spoke to us, nothing small or unworthy, but large, serene, consistent, the voice of an old intelligence which in another age and climate had pondered and thus disposed of the same questions which exercise us.

- Ralph Waldo Emerson

- India was the motherland of our race and Sanskrit the mother of Europe's languages: she was the mother of our philosophy; mother, through the Arabs of much of our mathematics; mother, through the Buddha, of the ideals embodied in Christianity; mother, through the village community of self-government and democracy. Mother India is in many ways the mother of us all.

- Will Durant (American Historian)

- We owe a lot to the Indians, who taught us how to count, without which no worthwhile scientific discovery could have been made.

- Albert Einstein (American Scientist)

- If I were asked under what sky the human mind has most fully developed some of its choicest gifts, has most deeply pondered on the greatest problems of life and has found solutions, I should point to India.

- Max Mueller (German Scholar)

- If there is one place on the face of earth where all the dreams of living men have found a home from the very earliest days when man began the dream of existence, it is India.

- Romain Rolland (French Scholar)

- So far as I am able to judge, nothing has been left undone, either by man or nature, to make India the most extraordinary country that the sun visits on his rounds. Nothing seems to have been forgotten, nothing overlooked.

- Mark Twain

प्रिय बच्चो! आपलोगों ने देखा कि विश्वप्रसिद्ध 'गीता' ज्ञान का अगाध सागर है और इसने प्राचीन समय से आज तक के सभी मानव पीढ़ियों को प्रभावित किया है, मार्गदर्शक रही है। आपलोग भी भाग्यशाली हैं कि इस गौरवग्रन्थ 'गीता' से परिचित होने जा रहे हैं।

* * *

‘गीता’ और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन

प्रिय बच्चो!

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलनकारियों की प्रेरणा-स्रोत भी ‘गीता’ रही। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाषचन्द्र बोस, वीर सावरकर आदि ‘गीता’ से प्रेरित थे। मंगल पाण्डेय, खुदीराम बोस, सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, सुखदेव, राजगुरु आदि देशभक्त फाँसी के फन्दे पर झूल गये। उन सबके हाथों में ‘गीता’ थी और जुबान पर था–

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

सुभाषचन्द्र बोस

चन्द्रशेखर आजाद

लाला लाजपत राय

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥

(गीता, २/२२-२४)

अर्थात् हमारा शरीर एक वस्त्र है, वस्त्र बदलकर हम फिर लौटेंगे और लड़ेंगे। तुम हमारी आत्मा को नहीं मार सकते। आत्मा को शस्त्रादि से काटा नहीं जा सकता; अग्नि, जल एवं वायु क्रमशः इसे न जला सकते हैं, न गीला कर सकते हैं और न ही सुखा सकते हैं। यह आत्मा सर्वव्यापक, अचल, स्थिर रहनेवाला और सनातन है।

* * *

‘गीता’ पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के विचार

● ‘गीता’ की ही शरण लेकर गाँधीजी ने भारत को आजाद कराया और राष्ट्रपिता की उपाधि प्राप्त की। जब भी जीवन में वे अपने को हताश-निराश पाते थे, तो ‘गीता’ का आश्रय लेकर पुनः आशा एवं शक्ति से तरोताजा हो जाते थे।

● ‘गीता’ मेरी माता है। ‘गीता’ मेरी बाइबिल या कुरान ही नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष माता ही है। यह जगत् जननी है, यह सभी को तृप्त करती है।

● मैं तो चाहता हूँ, ‘गीता’ केवल राष्ट्रीय शालाओं में ही नहीं बल्कि प्रत्येक शिक्षण संस्थाओं में पढ़ायी जाय। एक हिन्दू बालक या बालिका के लिये ‘गीता’ को न जानना शर्म की बात होनी चाहिये। यह सच है कि ‘गीता’ विश्वधर्म की एक पुस्तक है।

* * *

॥ ॐ श्री परमात्मने नमः॥

ज्ञानामृत 'गीता' का प्रादुर्भाव

प्रिय विद्यार्थियो!

लगभग ५२०० वर्ष पूर्व महर्षि वेदव्यास द्वारा संस्कृत में रचित 'महाभारत' विश्व का महानतम इतिहास-ग्रन्थ है जो भारत की ही नहीं, विश्व की सभी प्रचलित भाषाओं में अनूदित है। एक लाख श्लोकों में संकलित 'महाभारत' के अध्याय छः 'भीष्मपर्व' में भगवान् श्रीकृष्ण की वाणी को महर्षि वेदव्यास ने अलग से 'श्रीमद्भगवद्गीता' के रूप में संकलित किया है।

आइये! संक्षेप में महाभारत और उसके महानायक, गीता-प्रदाता भगवान् श्रीकृष्ण के बारे में जाना जाय।

॥ महाभारत कथा ॥

प्राचीनकाल में ययाति नाम के बड़े प्रतापी राजा राज्य करते थे। उनकी दो रानियाँ थीं– देवयानी और शर्मिष्ठा। देवयानी के दो पुत्र हुए– यदु और तुर्वसु। यदु के नाम से यदुवंशी राजाओं की परम्परा चली। इसी वंश में आगे चलकर श्रीकृष्ण हुए।

दूसरी रानी शर्मिष्ठा के तीन पुत्रों में पुरु सबसे छोटे, बुद्धिमान् और महान् पराक्रमी थे। ययाति ने उन्हें ही अपना उत्तराधिकारी बनाया। इसी चन्द्रवंश के राजा दुष्यन्त के पुत्र

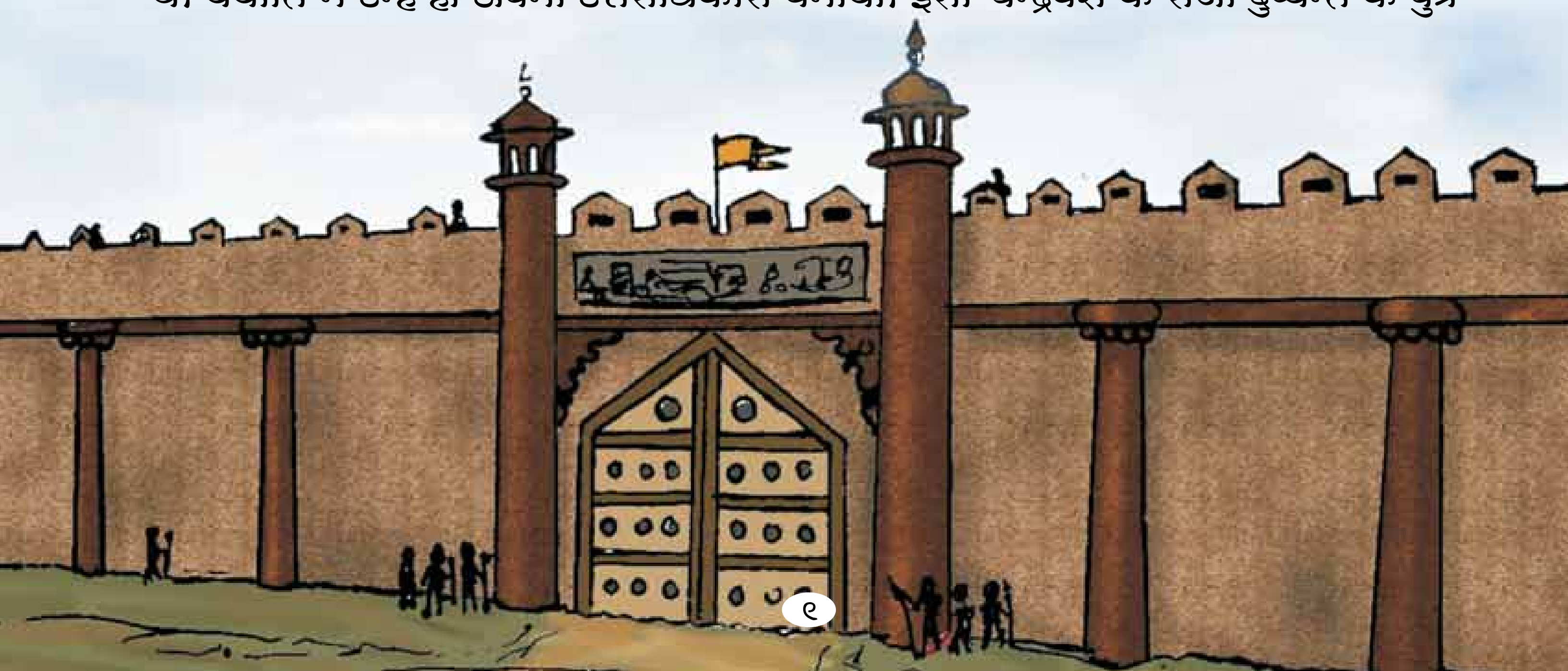

भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारत' पड़ा। राजा भरत के वंश में राजा हस्तिन् हुए, जिन्होंने दिल्ली के समीप हस्तिनापुर नामक नगर को बसाया। इसी वंश में कुरु नाम के राजा हुए, जिससे यह वंश 'कौरव वंश' कहलाया।

आज से लगभग ५४०० वर्ष पूर्व हस्तिनापुर के इस विशाल साम्राज्य पर कौरव वंश के राजा शान्तनु राज्य करते थे। उनकी दो रानियाँ थीं। प्रथम रानी गंगादेवी के पुत्र देवव्रत थे, जो भीष्म नाम से जाने जाते हैं। दूसरी रानी दासराज कन्या मत्स्योदरी थीं जो विवाह के बाद 'सत्यवती' कहलायीं। यह विवाह भीष्म की प्रतिज्ञा के बाद हुआ था कि "मैं आजीवन ब्रह्मचारी रहूँगा।" जिससे रानी सत्यवती का पुत्र ही राज्य का उत्तराधिकारी होगा। इस प्रतिज्ञा के कारण ही वे भीष्म कहलाये। वे आजीवन ब्रह्मचारी रहकर कौरव वंश की रक्षा करते रहे।

रानी सत्यवती के दो पुत्र हुए– चित्रांगद और विचित्रवीर्य। चित्रांगद की निःसंतान मृत्यु के बाद भीष्म ने विचित्रवीर्य को सिंहासन पर बैठाया और उनका विवाह काशी नरेश की पुत्रियों अम्बिका और अम्बालिका से कराया। महर्षि वेदव्यास के आशीर्वाद से अम्बिका से धृतराष्ट्र एवं अम्बालिका से पाण्डु नामक पुत्र हुए और अम्बालिका की दासी ने भी एक पुत्र को जन्म दिया जिनका नाम विदुर था।

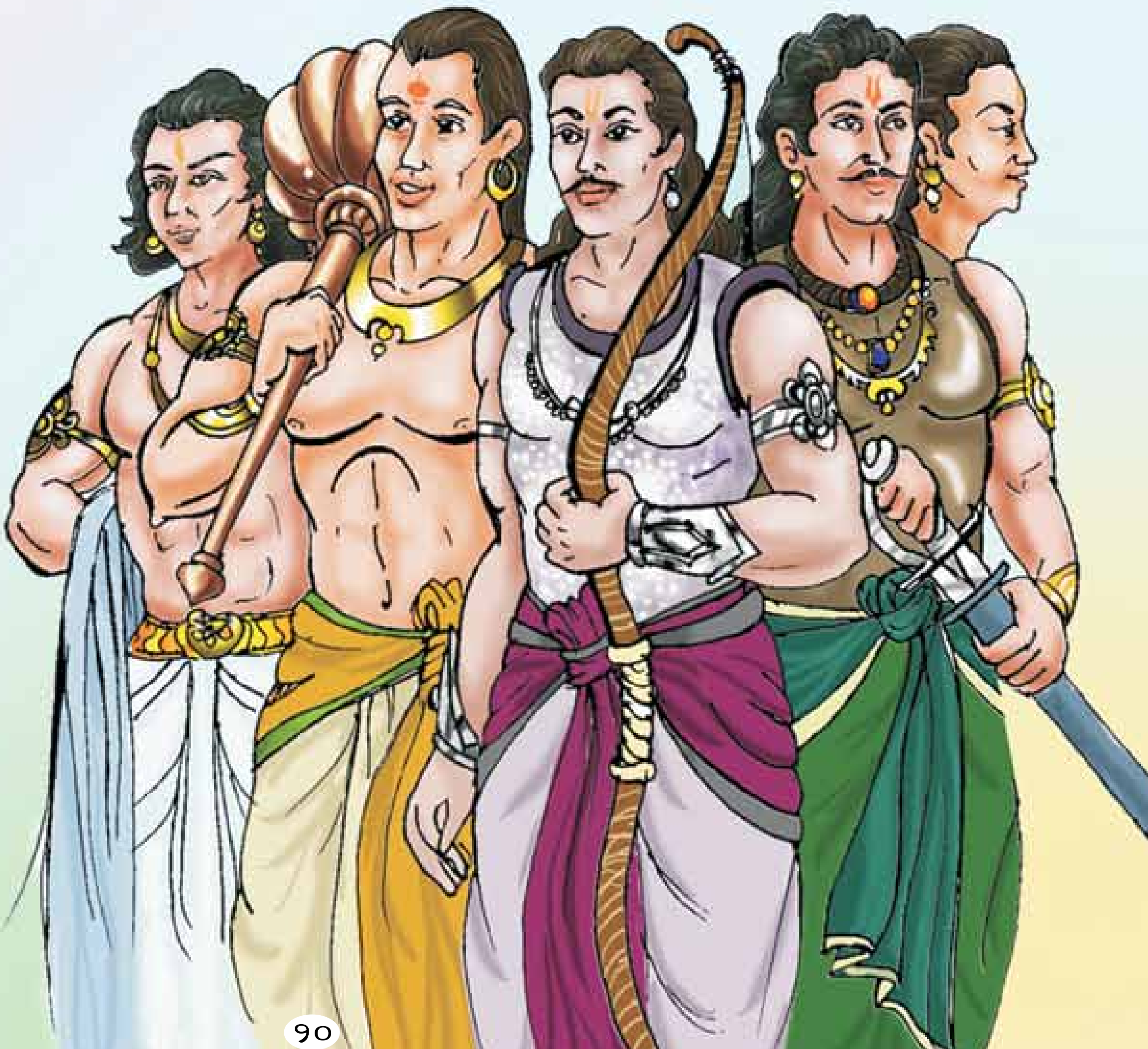

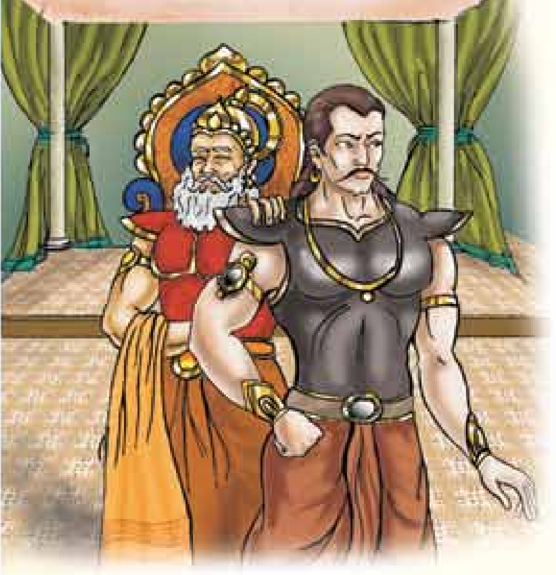

धृतराष्ट्र का विवाह गान्धार देश की राजकन्या गान्धारी से हुआ। पाण्डु का विवाह राजा कुन्तिभोज की पुत्री कुन्ती और मद्र देश की राजकुमारी माद्री से हुआ। धृतराष्ट्र जन्म से अन्धे थे, इसलिये भीष्म पितामह ने राजसिंहासन पर पाण्डु को बैठाया और विद्वान् विदुर को मंत्री बनाया।

गान्धारी को दुर्योधन, दुःशासन, दुःसह आदि सौ पुत्र तथा दुःशला नाम की एक कन्या थी। ये सभी भाई कौरव नाम से प्रसिद्ध हुए।

कुन्ती से तीन पुत्र युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन तथा माद्री से दो पुत्र नकुल और सहदेव हुए। पाण्डु के पुत्र होने से पाँचों भाई पाण्डव कहलाये। पाण्डव शूरवीर, पराक्रमी और शीलवान् थे। सभी कौरव एवं पाण्डव गुरु कृपाचार्य से एक साथ विद्या ग्रहण कर रहे थे। बाद में भीष्म के अनुरोध पर गुरु द्रोणाचार्य ने सभी राजकुमारों को धनुर्विद्या सिखलायी। सभी राजकुमारों में तीर चलाने में अर्जुन तथा गदायुद्ध में भीम व दुर्योधन निपुण थे।

कुछ वर्षों तक राज्य करने के बाद पाण्डु की मृत्यु हो गयी। पाण्डव राजसिंहासन के वास्तविक उत्तराधिकारी थे लेकिन दुर्योधन को यह बात पसन्द न थी। पुत्रमोह में अन्धे धृतराष्ट्र की भी इच्छा थी कि राज्य उसके बेटे दुर्योधन को मिले।

धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव पाण्डवों से जलने लगे और उन्हें तरह-तरह से कष्ट पहुँचाना शुरू कर दिया। उन्होंने भीम को जहर दिया, लाक्षागृह का निर्माण कराकर उसमें कुन्तीसहित पाँचों पाण्डवों को जलाने का उपाय भी किया। बैरभाव बढ़ता गया। अन्त में पितामह भीष्म के समझाने पर कुरु राज्य के दो हिस्से किये गये। कौरव हस्तिनापुर में राज्य करते रहे और पाण्डवों को एक अलग राज्य दे दिया गया, जो इन्द्रप्रस्थ के नाम से विख्यात हुआ। इस प्रकार कुछ समय तक शान्ति रही।

कुछ वर्षों बाद दुष्ट दुर्योधन के आमन्त्रण पर चौसर (जुए के खेल) में कुटिल शकुनि ने युधिष्ठिर को हरा दिया, जिसके फलस्वरूप पाण्डवों का राज्य छिन गया और उन्हें बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास भोगना पड़ा। सारी शर्तें पूरी कर वनवास से लौटने पर भी लालची दुर्योधन ने राज्य वापस करने से इनकार कर दिया। पाण्डवों के वनवास के दौरान वह चतुरंगिणी सेना इकट्ठी कर मदान्ध हो गया था।

अन्तिम प्रयासहेतु योगेश्वर श्रीकृष्ण शान्तिदूत के रूप में महाराजा धृतराष्ट्र से मिले, लेकिन मदान्ध दुर्योधन ने 'सूई की नोंक बराबर भूमि' भी देने से इनकार कर दिया। अन्त में युद्ध हुआ।

युद्ध में दुर्योधन सहित सारे कौरव मारे गये और पाण्डवों की विजय हुई। पाण्डवों ने शरशय्या पर लेटे पितामह भीष्म से आशीर्वाद लेकर धर्म-साम्राज्य की स्थापना की।

बच्चों! धृतराष्ट्र अन्धे थे फिर भी रथचालक संजय के माध्यम से युद्ध का सारा विवरण सुन रहे थे। महर्षि वेदव्यास द्वारा प्रदत्त दिव्यदृष्टि से सञ्जय सारा विवरण सुना रहे थे और बता रहे थे कि राजन्! इस युद्ध में पाण्डवों की ही विजय होगी; क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण उनके साथ हैं। राजन्! जहाँ भगवान् हैं और अनुरागी भक्त है, वहीं पर ऐश्वर्य, विजय और ईश्वरीय विभूति है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध में अपने प्रिय सखा-मित्र-शिष्य अर्जुन के सारथी बनकर उसे ऐश्वर्य, विजय, विभूति, साम्राज्य आदि सबकुछ उपलब्ध कराया।

संक्षेप में यही महाभारत की कथा है, जो भारत का प्रामाणिक इतिहास है। इसी घटित

घटना के माध्यम से और इसके पात्रों को प्रतीक बनाकर भगवान् श्रीकृष्ण ने गीताज्ञान का प्रादुर्भाव किया, उपदेश दिया।

महाभारत का ऐतिहासिक युद्ध सांसारिक है, जबकि 'गीता' का युद्ध आध्यात्मिक है। जिसमें एक ही मनुष्य के अन्तःकरण में स्थित अच्छी और बुरी प्रवृत्तियों का संघर्ष है जिसका चित्रण 'गीता' में किया गया है।

भगवान् जानते थे कि अन्त में इस सांसारिक संघर्ष में जीतने वाला भी कुछ नहीं पायेगा, हताश और निराश रहेगा। संसार जन्म-मृत्यु के बीच का पड़ाव है, नश्वर है। अन्त में मानव खाली हाथ ही जाता है।

इसलिये भगवान् श्रीकृष्ण ने इस घटित घटना के नायकों को प्रतीक बनाकर वास्तविक युद्ध (आत्मदर्शन की विधि) को समझाया है। इस आध्यात्मिक युद्ध में विजयी मनुष्य अपने ज्योतिर्मय आत्मस्वरूप (सहज स्वरूप) की उपलब्धि द्वारा सदा रहने वाला जीवन, सदा रहने वाली समृद्धि, सदा रहने वाला धाम और शान्ति प्राप्त करता है। जो सभी के लिये सुलभ है।

वास्तव में वह 'एक' ज्योतिर्मय परमात्मा ही सत्य है, शाश्वत है, सनातन है। अन्ततः श्रद्धालु भक्त उसी में स्थिति प्राप्त करता है। वह चाहे कहीं भी जन्मा हो, किसी भी कुल-कबीला व उपाधि वाला हो, श्रद्धा और समर्पण के साथ लग जायेगा, वह भगवान् के वरद्हस्त के नीचे चलकर अपना सहज स्वरूप अवश्य पा जायेगा। वास्तव में पाने का यही विधान है।

प्रिय विद्यार्थियो!

अब आपलोगों को महाभारत के महानायक भगवान् श्रीकृष्ण के बारे में जानने की उत्सुकता होगी।

परमात्मा, भगवान्, इष्ट, सद्गुरु, योगेश्वर.....श्रीकृष्ण

भगवान् श्रीकृष्ण को सम्बोधित उपरोक्त सभी उपाधियाँ एक ही हैं, विशेषण हैं, जो साधना की पूर्णता पर ईश्वर-प्राप्ति की स्थितियाँ हैं। श्रीकृष्ण एक पूर्ण योगी थे। बालपन में गुरु महर्षि सान्दीपनि जी की शरण, सान्निध्य, सेवा एवं साधना द्वारा सारी विद्याओं में पारंगत होकर योगेश्वर श्रीकृष्ण आजीवन मानव-कल्याण करते रहे। योगेश्वर वह होता है जो पूर्णयोगी हो, महापुरुष हो, सद्गुरु हो और अपने अनुरागी शिष्य में इसका संचार करने में समर्थ हो। आपकी अगणित लीलाएँ हैं, जिनमें सबसे प्रमुख है– आपके श्रीमुख से प्रसारित गीताज्ञान। आपने पूरी विश्व मानवता को अविनाशी योग गीताज्ञान प्रदान कर ईश्वरप्राप्ति के साधन को जन-जन तक सुलभ कराया है।

वास्तव में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने मोहग्रस्त अर्जुन को अविनाशी योग 'गीता' द्वारा युद्ध में प्रवृत्त कर शाश्वत विजय प्रदान करायी थी। सांसारिक युद्ध में तो विजय-हार-विजय

का क्रम चलता रहता है, जबकि 'गीता' के युद्ध द्वारा शाश्वत विजय प्राप्त होती है जिसके पीछे हार नहीं है।

'गीता' एक सम्पूर्ण साधनात्मक ग्रन्थ है, गुरु-शिष्य संवाद है। सद्गुरु हैं महापुरुष योगेश्वर श्रीकृष्ण और शिष्य है एक अनुरागी साधक अर्जुन। हम सबकी अनुरागपूरित लगन ही 'अर्जुन' है।

बच्चों, ध्यान देंगे! पूरी 'गीता' का एक भी श्लोक बाहरी मारकाट का समर्थन नहीं करता। 'गीता' में वर्णित युद्धक्षेत्र कोई भूक्षेत्र (भूखण्ड) नहीं है।

गीता वक्ता श्रीकृष्ण ने स्वयं ही बताया है कि– **"इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।"**– कौन्तेय! यह शरीर ही एक क्षेत्र है (पढ़ें, यथार्थ गीता, १३/१)। यह युद्ध किसी अनुरागी साधक के अन्तःकरण में ही चलनेवाली अच्छी और बुरी प्रवृत्तियों का संघर्ष/युद्ध है। इसका पार पाना ही विजय है।

योगेश्वर श्रीकृष्ण ने महाभारत के पात्रों का उदाहरण देकर, उन्हें उद्देश्य बनाकर 'गीता' का उपदेश दिया है। जिसमें धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र, प्रकृति एवं पुरुष, दैवी एवं आसुरी सम्पद्, सजातीय एवं विजातीय प्रवृत्तियों के संघर्ष को इस घटित घटना के पात्रों के रूप में सम्बोधित करके समझाया है और अन्तःकरण के विकारों तथा परमात्मा की प्राप्ति के साधनों का चित्रण किया है।

गीतोक्त युद्ध में विजयी साधक को शाश्वत विजय प्राप्त होती है। साधक, आवागमन (जन्म-मरण-जन्म) के चक्र से मुक्त होकर परमात्मा के परमधाम को प्राप्त होता है।

इसको समझने के लिये अपने गुरुजन एवं माता-पिता से पूछें और 'यथार्थ गीता' पढ़ें।

* * *

'श्रीमद्भगवद्गीता'

लगभग ५२०० वर्षों पूर्व योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अपने श्रीमुख से अविनाशी योग (पुरातन ज्ञान) का उपदेश अनुरागी शिष्य अर्जुन को माध्यम बनाकर सभी मनुष्यों को प्रदान किया। अविनाशी योग अर्थात् ऐसी विद्या जो अजर-अमर परमात्मा से योग करा दे, मिला दे, परमात्मा को धारण करा दे। यही धर्म की भी परिभाषा है।

तत्कालीन महर्षि वेदव्यास ने इस ईश्वरीय वाणी को सर्वप्रथम संकलित करके श्रीमद्भगवद्गीता शास्त्र का रूप प्रदान किया।

प्रिय विद्यार्थियो! यह चारों वेद और उपनिषदों का सार है। इसमें बताये गये निर्देशों का पालन करके आप अपने जीवन में सबकुछ पा सकते हैं– सर्वोत्तम शिक्षा, अच्छी आजीविका, सुख-शान्ति, समृद्धि, नाम, यश और परमात्मा का परमधाम, मोक्ष तक। यही गीता का दर्शन है, यथार्थ है। पालन करके तो देखें!

विद्यार्थियो! आज के प्रचलित सभी मज़हब, पन्थ एवं सम्प्रदाय श्रीकृष्णकाल में नहीं थे। उनके हजारों वर्षों पश्चात् जिन महापुरुषों ने एक ईश्वर को सत्य बताया, वे सभी गीता के ही सन्देशवाहक हैं। संसार के सभी महापुरुष एक ही हैं। वैदिककाल के महर्षिगण, भगवान् श्रीराम एवं श्रीकृष्ण, महर्षि मूसा, महात्मा जरथुस्त्र, भगवान् महावीर, गौतम बुद्ध, ईसा मसीह, मुहम्मद साहब, आद्यशङ्कराचार्य, योगी मत्स्येन्द्रनाथ, सन्त कबीर, गोस्वामी तुलसीदास, गुरुनानक, स्वामी दयानन्द सरस्वती, श्री रामकृष्ण परमहंस,

भगवान का विराट रूप हृदय में देखा जाता है, साधनागम्य है।

एक परमात्मा के भजन के बिना जो कल्याण चाहता है, मूढ़ है।

परमात्मा ही सत्य है, ॐ का जप करें।

अहुरमज्दा एक ईश्वर ही सत्य है।

एक ईश्वर की शरण, श्रध्दा और साधना।

एक अल्लाह के सिवाय कोई सत्य नहीं है।

एक ओंकार सदगुरु प्रसादि।

अविनाशी सर्वज्ञ पद को प्राप्त किया।

आत्मा ही सत्य है, कठोर तपस्या से इसी जन्म में जाना जा सकता है।

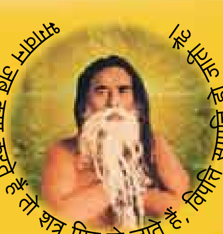
भगवान जब कृपा करते हैं तो शत्रु मित्र हो जाते हैं, विपत्ति सम्पत्ति हो जाती है।

स्वामी विवेकानन्द और स्वामी श्री परमानन्द जी आदि सभी महापुरुषों ने 'गीता' के 'एक ईश्वरवाद' सन्देश को ही अपने-अपने देश-काल की भाषाओं में समझाया है और उस ईश्वर को ब्रह्म, परमात्मा, आत्मा, अहुरमज्दा, गॉड, ख़ुदा आदि पर्यायवाची नामों से सम्बोधित किया है।

सत्य की यही प्रतिध्वनि चारों वेद, उपनिषद्, रामायण, अवेस्ता, जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य 'महापरिनिब्बानसुत्त', बाइबिल, कुरान, श्रीरामचरितमानस, कबीरवाणी 'साखी', गुरु ग्रन्थसाहब इत्यादि धार्मिक ग्रन्थों में है जो कि गीता के ही विस्तार हैं, इसीलिये भारत विश्वगुरु है।

* * *

— पूज्यश्री के श्रीमुख की वाणी —

.....हमारी यह संस्कृति है कि हम सभी कार्यों का प्रारम्भ व समापन प्रभु का स्मरण करते हुए करते हैं। इसलिये प्रिय बच्चो! सोते-जागते, शौच जाते, नहाते, खाना खाते, पानी पीते, उठते-बैठते, स्कूल जाते, पढ़ते-लिखते, खेलते-कूदते, जीवन के हर मोड़ पर एक परमात्मा का स्मरण बना रहे तो सोने में सुहागा है। हाँ! सुबह-शाम पन्द्रह-बीस मिनट बैठकर 'ॐ' के जप के लिये समय अवश्य दें। सभी बच्चे, जवान, बूढ़े, स्त्री-पुरुष जिसे भी मानव-तन मिला है, सभी को ॐ का जप करना चाहिये।.....

—स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी महाराज

'श्रीमद्भगवद्गीता' की यथावत् सुबोध हिन्दी व्याख्या

।। यथार्थ गीता ।।

मानवमात्र का एकमात्र धर्मशास्त्र

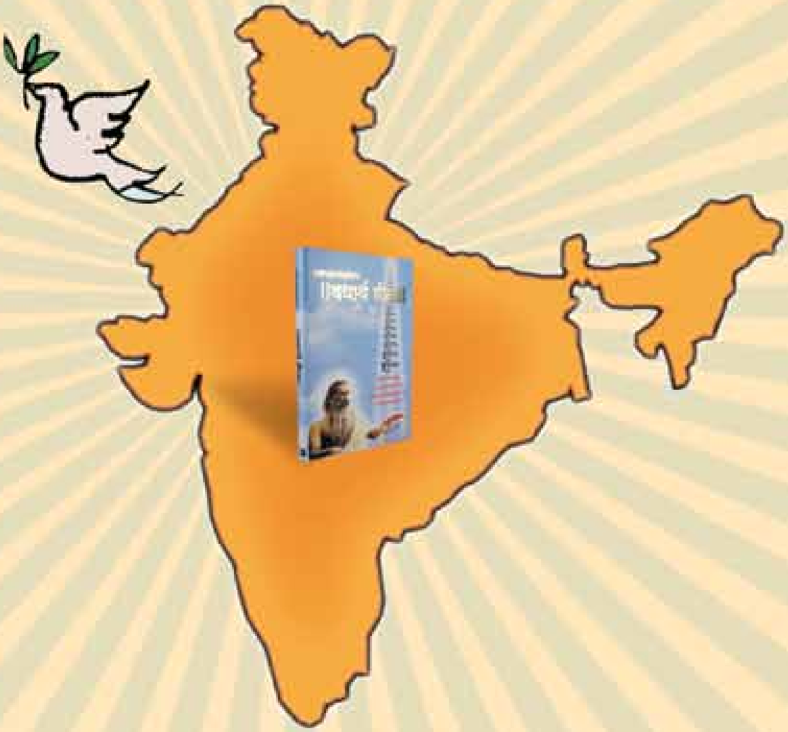

प्रिय विद्यार्थियो!

कालान्तर से 'गीता' का आशय विलुप्त हो चला था, धूमिल हो गया था जिससे 'गीता' के नाम पर तमाम धार्मिक आडम्बर एवं सामाजिक कुरीतियाँ पनप गयी थीं या सामाजिक व्यवस्था के नाम पर स्वार्थवश पनपा दी गयी थीं। समाज में जाति-पाँति, वर्ण-व्यवस्था, ऊँच-नीच, धर्म-अधर्म व पन्थान्तरण की विकृत व्यवस्था जड़ जमा चुकी थी। इस भ्रमित (संशय) काल में आलोक-स्तम्भ के रूप में 'यथार्थ गीता' का प्रकाशन हुआ है। आइये 'यथार्थ गीता' की संक्षिप्त जानकारी ली जाय।

५२०० वर्षों के लम्बे अन्तराल के बाद स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज ने श्रीकृष्ण का दिव्य सन्देश 'गीता' जो कि संस्कृत में है, उसका हिन्दी में सहज, सुबोध प्रत्यक्षानुभूत व्याख्या 'यथार्थ गीता' के रूप में किया है। ईश्वरीय प्रेरणा से श्री गुरु पूर्णिमा, २४ जुलाई वर्ष १९८३ में प्रकाशित 'यथार्थ गीता' अद्यावधि मानवमात्र का दिशा-निर्देशन कर रही है।

भगवान् श्रीकृष्ण के आशय को यथा-अर्थ (ज्यों-का-त्यों) व्यक्त करने के कारण इसका नाम 'यथार्थ गीता' है। महाराजश्री ने 'यथार्थ गीता' प्रस्तुत करके सत्य के नाम पर फैली और सत्य-सी प्रतीत होनेवाली तमाम कुरीतियों का शमन करके हम सभी को कल्याण का रास्ता दिखलाया है।

कालजयी कृति 'यथार्थ गीता' भारत की सभी प्रमुख भाषाओं– हिन्दी, मराठी, पंजाबी, गुजराती, उर्दू, संस्कृत, उड़िया, बंगला, तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, आसामी एवं सिन्धी और विदेशी भाषाओं– अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, नेपाली, स्पेनिस, नार्वेजियन, चायनीज, अरबी, फारसी, डच, इटालियन एवं रूसी भाषाओं में भी अनूदित एवं उपलब्ध है।

'यथार्थ गीता' का अभ्युदय बीसवीं शताब्दी की महानतम रचना, घटना एवं उपलब्धि है। वह समय अब दूर नहीं है जब 'यथार्थ गीता'रूपी अक्षय वटवृक्ष की छाँव में सम्पूर्ण विश्व की मानवता शान्ति पायेगी।

'गीता' को यथावत् समझने के लिये, सांगोपांग जानकारी के लिये 'यथार्थ गीता' को तीन-चार बार अवश्य पढ़ें।

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

‘यथार्थ गीता’ के प्रणेता

सद्गुरु स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज

‘यथार्थ गीता’ के प्रणेता एक परमात्मस्थित महापुरुष हैं। आपकी शैक्षिक उपाधियाँ तो कोई भी नहीं हैं; लेकिन सद्गुरु कृपा से पूर्णत्व प्राप्त कर मानवमात्र के कल्याण में रत हैं– ‘सर्वभूतहिते रतः’। लेखन को आप साधना-भजन में व्यवधान मानते रहे किन्तु श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य ‘यथार्थ गीता’ के प्रणयन में ईश्वरीय निर्देशन ही निमित्त बना।

भगवान् ने आपको अनुभव में बताया कि आपकी सारी वृत्तियाँ शान्त हो चुकी हैं, केवल एक छोटी-सी वृत्ति शेष है– गीता-ज्ञान के आशय का यथावत् पुनर्प्रकाशन! पहले तो आपने इस वृत्ति को भजन से काटने का प्रयास किया; किन्तु भगवान् के आदेशों का मूर्त्त स्वरूप है– ‘यथार्थ गीता’।

‘यथार्थ गीता’ के रचनाकाल में भाष्य में जहाँ भी त्रुटि होती, भगवान् उसे सुधार देते थे। पूज्यश्री की ‘स्वान्तःसुखाय’ यह कालजयी कृति ‘सर्वान्तःसुखाय’ हो चली है। यह सिर्फ आर्यावर्त भारत ही नहीं, विश्व के मानवमात्र के कल्याण में रत है, संलग्न है।

‘यथार्थ गीता’ के आलोक में आप भी प्रकाशित हों!

* * *

‘गीता’ के प्रमुख सिद्धान्त

प्रिय विद्यार्थियो!

सृष्टि के प्रारम्भ से प्रसारित अविनाशी योग ‘गीता’ से विश्व की सभी मानव पीढ़ियों ने लाभ उठाया है। सभी के लिये यह रोशनी की मीनार, आलोक-स्तम्भ रही है। आइये, इसके आलोक में हम भी प्रकाशित हों।

गीता के प्रमुख सिद्धान्त हैं–

- एक परमात्मा ही सत्य है (अर्थात् सच्चाई है), शाश्वत है (अर्थात् अजर, अमर, अविनाशी है) और सनातन है (अर्थात् सदा से रहा है और रहेगा)। – (गीता, २/२४)

  बच्चो! उसी एक परमात्मा को आत्मा, ईश्वर, ब्रह्म, गॉड या खुदा भी कहते हैं। ये सभी उस एक ईश्वर को ही सम्बोधित नाम हैं, देश-काल और भाषा के अनुसार अलग-अलग नामकरण हैं।

- हम सब उसी एक परमात्मा के अंश हैं, उसकी ही संतान हैं। – (गीता, १५/७)

  अतः सभी बच्चों को जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब और रिलिजन-मत के भेदभाव को खत्म कर देना चाहिये और समानता के आधार पर आपसी व्यवहार करना चाहिये।

- वह परमात्मा या ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में निवास करता है।

  – (गीता, १८/६१, १५/१५)

  अतः हृदय में स्थित उस एक ईश्वर के ही शरण में जाना चाहिये और सम्पूर्ण भावों के साथ उसका ध्यान-पूजन-भजन करना चाहिये। ऐसा नहीं कि अन्य देवी-देवता में अपने श्रद्धा-भाव को बाँट दें। पूर्ण श्रद्धा और समर्पण के साथ एक ईश्वर को पूजनेवाला सबकुछ प्राप्त करता है, यहाँ तक कि ईश्वर को भी। – (गीता, १८/६२)

  एक बात और! आप जो भी सोचते हैं, उसके पहले ही ईश्वर सबकुछ जानता है; क्योंकि वह आपके हृदय में ही स्थित (विराजमान) है। अतः हमेशा शुभ सोचें।

- ईश्वर को अनन्य भक्ति (अन्य न अर्थात् एक ईश्वर के अलावा किसी अन्य देवी-देवता की भक्ति नहीं) द्वारा देखा जा सकता है, जाना जा सकता है और उसे प्राप्त भी किया जा सकता है। – (गीता, ११/५४)

- जो अन्य देवी-देवताओं को पूजते हैं, वे अविवेकी हैं। उनका पूजन विधिपूर्वक नहीं है, इसलिये नष्ट हो जाता है। –(गीता, ७/२०, ९/२३, ७/२३)
- तो बच्चो! पूजा की नियत विधि है– ॐ का जप, एक परमात्मा का स्मरण (ध्यान) और किसी सन्त, महापुरुष की शरण और सेवा। बस इतना ही है ध्यान-पूजन-भजन की निर्धारित विधि। –(गीता, ८/१३)
- एक परमात्मा के भजन से आपके सभी कामनाओं की पूर्ति हो जायेगी। –(गीता, ९/२०)
- प्रिय बच्चो! बड़े भाग्य से यह मानव-शरीर मिलता है जो देवताओं को भी दुर्लभ है। इस मानव-तन की सार्थकता है– एक ईश्वर के भजन द्वारा सबकुछ प्राप्त कर लेना.... ईश्वर को भी। –(गीता, ९/३३)
- विश्व के सभी मनुष्यों का और आपका भी धर्मशास्त्र 'गीता' है। –(गीता, १५/२०)

  सृष्टि के आरम्भ से प्रसारित इस दिव्यज्ञान को महर्षि वेदव्यास ने लगभग ५२०० वर्ष पूर्व संकलित करके निर्णय दिया कि 'गीता' धर्मशास्त्र है।

  'गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।'

  अर्थात् जब ईश्वरीय गायन 'गीता' शास्त्र है तो फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार में जाने की क्या जरूरत है? अतः मानवमात्र के आदि धर्मशास्त्र 'गीता' का अनुसरण करें।
- एक भगवान्, महापुरुष, सद्गुरु, योगेश्वर (ये सब उस एक परमात्मा को ही सम्बोधित नाम हैं) के प्रति पूर्ण समर्पण ही धर्म है। –(गीता, १८/६६)
- धर्माचरण– उस प्रभु को पाने के लिये 'गीता' की निर्धारित विधि का आचरण ही धर्माचरण है। –(गीता, २/४०)
- धर्म की प्राप्ति– पूर्णयोगी, योगेश्वर, परमात्मस्थित सद्गुरु की शरण, सेवा और उनकी कृपा द्वारा ही धर्म की प्राप्ति सम्भव है। –(गीता, ४/३४, १४/२७)

विस्तृत जानकारी के लिये 'यथार्थ गीता' की तीन-चार आवृत्ति करें, पढ़ें।

* * *

।। विचार बिन्दु ।।

प्रिय बच्चो! 'गीता' एक सम्पूर्ण साधनात्मक ग्रन्थ है। पूरी 'गीता' गुरु-शिष्य संवाद है। इसमें अनुरागी शिष्य अर्जुन के सभी प्रश्नों का उत्तर योगेश्वर अर्थात् सद्गुरु श्रीकृष्ण ने दिया है। वे सभी प्रश्न आपके भी हैं, सभी अनुरागियों के हैं और होने भी चाहिये; तभी हम परमसत्य की खोज के लिये प्रेरित होंगे। 'गीता' यही बताती है। 'गीता' को यथावत् सरल रूप से समझने के लिये 'यथार्थ गीता' को अवश्य पढ़ें।

- गीताज्ञान प्रसारण के समय विश्व में कोई भी मज़हब या सम्प्रदाय (रिलिजन) नहीं था। वर्तमान में प्रचलित सभी मज़हब-सम्प्रदाय 'गीता' के हजारों वर्ष बाद प्रचलन में आये। अतः 'गीता' मज़हब, सम्प्रदाय व भेदभाव से मुक्त ज्ञानग्रन्थ है।
- वस्तुतः गीताज्ञान को ही विश्व के सभी महापुरुषों ने अपने-अपने देश-काल की भाषा में समझाया है। अर्थात् ईश्वर कहें या गॉड, परमात्मा कहें या ख़ुदा– इसी तरह पानी कहें या वाटर, जल कहें या आब; कोई अन्तर नहीं पड़ता। जो अन्तर डालते हैं, या तो वे जानते नहीं या अपने स्वार्थवश जानना नहीं चाहते। उनको समझायें और यह पुस्तिका और 'यथार्थ गीता' पढ़ने के लिये दें।
- 'गीता' एक सार्वकालिक (सभी समयों में उपयुक्त), सार्वलौकिक (सारे संसार में व्याप्त) और सार्वजनीन (सबके लिये उपयुक्त) मानवशास्त्र है। परमात्मा को धारण कराती है इसलिये धर्मशास्त्र है।
- प्रिय बच्चो! गीता के अनुसरण (पालन) के लिये आपको न तो किसी मत, सम्प्रदाय या 'रिलिजन' को छोड़ना है और न किसी में प्रवेश लेना है (दीक्षित होना है)। यह बाहरी आडम्बरों एवं कर्मकाण्डों से मुक्त है।

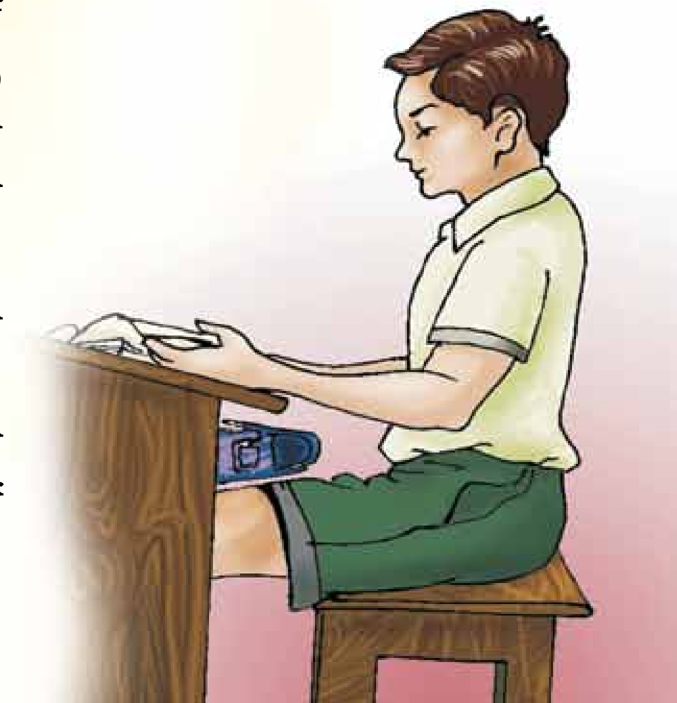

- गीता किसी विशेष व्यक्ति, वर्ग, सम्प्रदाय, देश-काल का ग्रन्थ नहीं है। यह प्रत्येक देश, सम्प्रदाय और सभी स्त्री-पुरुष एवं बच्चों के लिये है।
- यह साधन-ग्रन्थ 'यथार्थ गीता' पूरे विश्व के हर घर में और हर व्यक्ति के पास होना चाहिये। आपके स्कूल, विद्यालय, पुस्तकालय और स्कूल-बैग में भी होना चाहिये।
- 'यथार्थ गीता' का पालन करके आप अपने देश ही नहीं, विश्व को भी समस्याविहीन करेंगे। विश्वशान्ति और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को साकार करेंगे।

आपका कल्याण हो! आप सफल हों!! आप यशस्वी हों!!

* * *

एक ईश्वर की आराधना से सभी कामनाओं की पूर्ति होती है।

'गीता' में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं –

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। (गीता ७/१६)

हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन! मुझे चार प्रकार के भक्तजन भजते हैं– **आर्त**– जो दुःखी हैं, **अर्थार्थी**– जो सांसारिक पदार्थों व कामनाओं की पूर्ति चाहते हैं, **जिज्ञासु**– जो 'मुझे' यथार्थ रूप से, समग्रता से जानने की इच्छावाले हैं और **ज्ञानी**– जो साधना के परिपक्वकाल में मेरे प्रत्यक्ष दर्शन और मुझमें प्रवेश की स्थितिवाले हैं। इस प्रकार चार प्रकार के भक्तजन मुझको भजते हैं! मैं उन्हें सबकुछ देता हूँ।

(गीता ७/१६)

विद्यार्थियों के कर्त्तव्य

निम्नलिखित सूत्रों का पालन कर आप अपने जीवन के सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। पालन करके तो देखें!

- नियत दिनचर्या -

- प्रतिदिन ब्राह्ममुहूर्त में प्रातः चार बजे अवश्य उठ जाना चाहिये।
उठकर किसी एक इष्ट, परमात्मा या सद्गुरु (सभी एक हैं, पर्यायवाची सम्बोधन है) का श्रद्धापूर्वक दस मिनट तक ध्यान करना चाहिये।
- ध्यान हृदय में ही धरा जाता है; क्योंकि परमात्मा वहीं निवास करता है।
- इष्ट के ध्यान के बाद पन्द्रह मिनट तक ओम् का जप मुँह से बोलकर करें। श्वास अन्दर जाय तो ओम्, बाहर आये (प्रश्वास) तो ओम्। इस प्रकार श्वास-प्रश्वास की स्वाभाविक गति के साथ ओम् का लयपूर्वक धारावाही जप करें। जप करते समय श्वास-प्रश्वास के साथ ओम् के उतार-चढ़ाव पर ध्यान रखें।
- रोज सुबह बड़ों को, माता-पिता एवं गुरुजनों को सादर प्रणाम करें। घर के बड़े-बूढ़ों की सेवा करें और सभी की आज्ञा का पालन करें। इससे आपकी आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होगी।
- प्रतिदिन सुबह या शाम 'यथार्थ गीता' के चार श्लोकों का अर्थसहित लयपूर्वक, सस्वर (गाते हुए) पाठ करें।
- नियमित रूप से विद्यालय जायँ। पढ़ाई में पूरा ध्यान दें और स्कूल का होमवर्क रोज-का-रोज पूरा करें।
- उत्तम स्वास्थ्य एवं सौष्ठव के लिये रोज शारीरिक परिश्रम और खेलकूद में भाग लें या व्यायाम करें।
- रात में नौ बजे तक सो जायँ, जिससे प्रातः चार बजे ब्राह्ममुहूर्त में उठ सकें। सोने-जागने के समय का नियमित पालन करें। इसके आपके सारे कार्य व्यवस्थित रहेंगे।
- **आवश्यक**– रात में सोने से पहले इष्ट का ध्यान करें और दस मिनट तक 'ओम्' का जप उपरोक्त विधि से करते-करते सो जायँ।

- प्रति सप्ताह -

- गीता का एक श्लोक कण्ठस्थ (याद) कर लें।
- एक 'यथार्थ गीता-अभ्यास-पुस्तिका' बनायें और उसमें प्रति सप्ताह तीन श्लोक हाथ से लिखें।
- इस साप्ताहिक कार्य को अपने माता-पिता एवं विद्यालय में गुरुजन को दिखाएँ और कण्ठस्थ श्लोक उन्हें गाकर सुनाएँ।
- विद्यालय में, घर या पड़ोस में – अपने सहपाठी और मित्रों के साथ एक घण्टे का 'यथार्थ गीता–ज्ञानगोष्ठी' का प्रति सप्ताह आयोजन करें। इस गोष्ठी में 'यथार्थ गीता' का सामूहिक पाठ करें और उस पर आपसी परिचर्चा कर अपने ज्ञानकोश को बढ़ायें। इस कार्यक्रम में अपने गुरुजन एवं अभिभावकों को भी आमन्त्रित कर उनका मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करें।

* * *

।। ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः ।।

गुरु-महिमा

राम कृष्ण से को बड़ा, तिन्हहु तो गुरु कीन।
तीन लोक के ये धनी, गुरु आज्ञा आधीन।।

भगवान् श्रीराम, श्रीकृष्ण से भी बड़ा कोई पूजनीय है, वे भी तो मानव तनधारी थे। बालपन में उन्होंने भी गुरु विश्वामित्र, वशिष्ठजी तथा सांदीपनि मुनि के शरण में जाकर सभी लौकिक एवं पारलौकिक विद्या प्राप्त कर मानव से महामानव, पुरुष से महापुरुष की स्थिति प्राप्त की।

अतः बच्चो! सद्गुरु की शरण, उनकी सेवा और उनकी आज्ञा का पालन सभी विद्याओं की जननी है। यह आपको सामर्थ्यवान्, विद्यावान् और महान् बनाती है।

धन्या माता पिता धन्यो, गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद्गुरुभक्तता।।

जिसके अन्दर गुरुभक्ति है उसकी माता धन्य है, उसके पिता धन्य हैं, उसका वंश धन्य है, उसके वंश में जन्म लेनेवाले धन्य हैं, समग्र धरती माता धन्य है।

* * *

विश्व की महानतम संस्कृति 'भारत' की गुरु-शिष्य परम्परा

गुरु वशिष्ठजी के श्रीचरणों में भगवान् श्रीरामजी

गुरु सांदीपनिजी के श्रीचरणों में भगवान् श्रीकृष्णजी

गुरु श्री परमानन्दजी के श्रीचरणों में सद्गुरु श्री अड़गड़ानन्दजी

॥ ॐ श्री परमात्मने नमः ॥

गौरवशाली इतिहास-ग्रन्थ 'महाभारत'

प्रिय विद्यार्थियो!

महर्षि वेदव्यास द्वारा संकलित इतिहास-ग्रन्थ 'महाभारत' आर्यावर्त भारत का प्रामाणिक इतिहास है। इसमें सृष्टि के आरम्भ से लेकर द्वापर तक (आज से ५२०० वर्ष पूर्व श्रीकृष्णकाल तक) की भारतीय सभ्यता और संस्कृति का विवरण अंकित है। मानव-जीवन का ऐसा कोई भी पहलू नहीं है जो इससे अछूता हो। ऐसा कुछ भी नहीं जो महाभारत में न हो– लोकनीति, राजनीति, युद्धनीति, व्यवहारनीति, जीवन-दर्शन, अध्यात्म और धर्म।

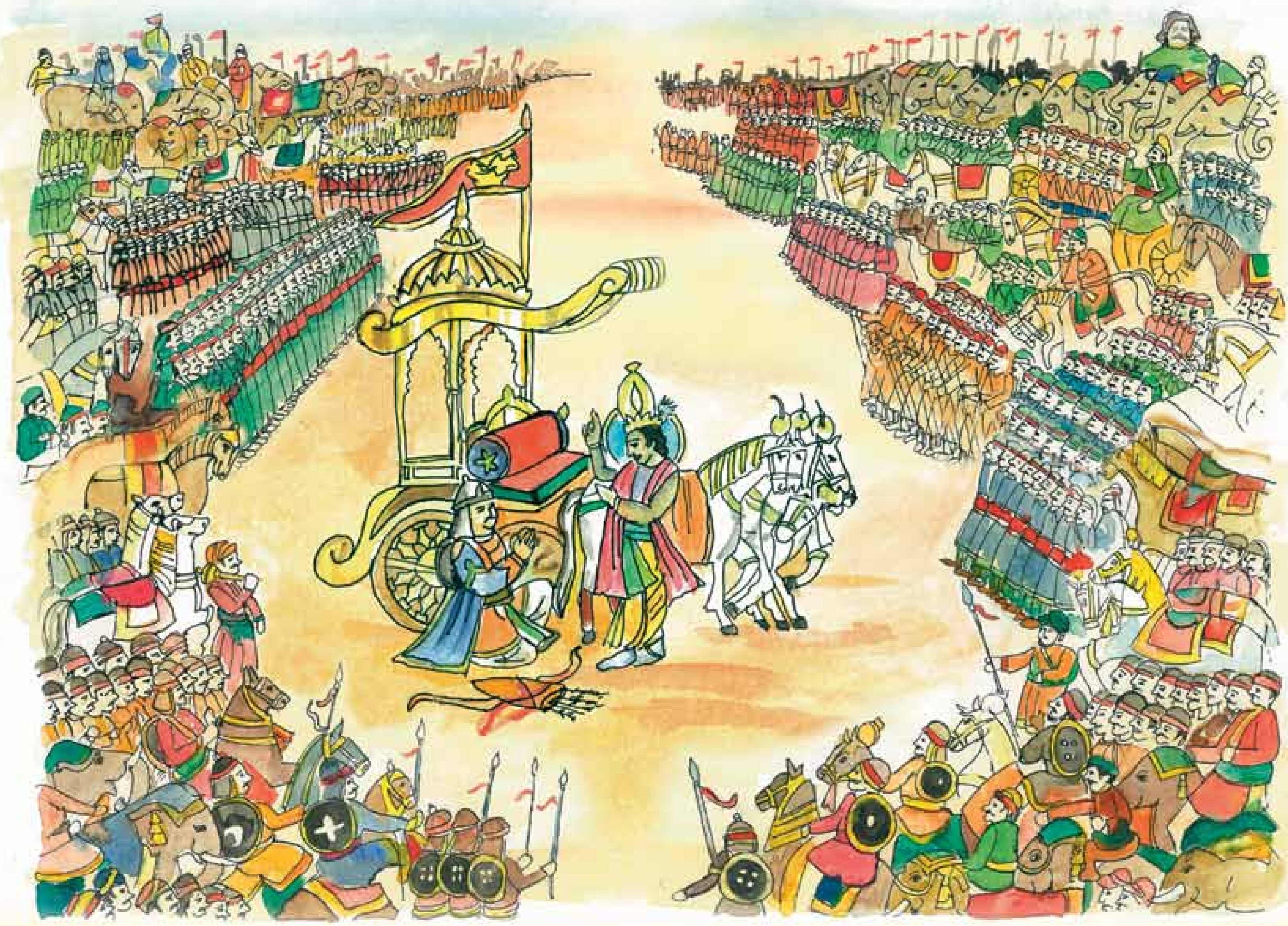

भारतीय ऋषि-मुनियों का सत्यान्वेषण (सत्य– एकमात्र परमात्मा की खोज), साधना और ईश्वरप्राप्ति का सम्पूर्ण विवरण महाभारत में उपलब्ध है। महाभारत में वर्णित सभी कथानक और घटनाएँ सत्य हैं, हमारे पूर्वजों के कीर्तिमान हैं। हम सब उन्हीं पूर्वजों की सन्तान हैं।

महर्षि वेदव्यास द्वारा एक लाख श्लोकों में संकलित 'महाभारत' के छठवें अध्याय 'भीष्मपर्व' में वर्णित ७०० श्लोकीय 'श्रीमद्भगवद्गीता' हमलोगों का 'धर्मशास्त्र' है, जिसमें बताया गया है कि सत्य क्या है और उसे कैसे प्राप्त करें। इस महान् ज्ञान 'गीता' की संक्षिप्त जानकारी इस पुस्तिका के प्रारम्भ में दी गयी है। पूर्ण जानकारी गीताभाष्य 'यथार्थ गीता' में उपलब्ध है।

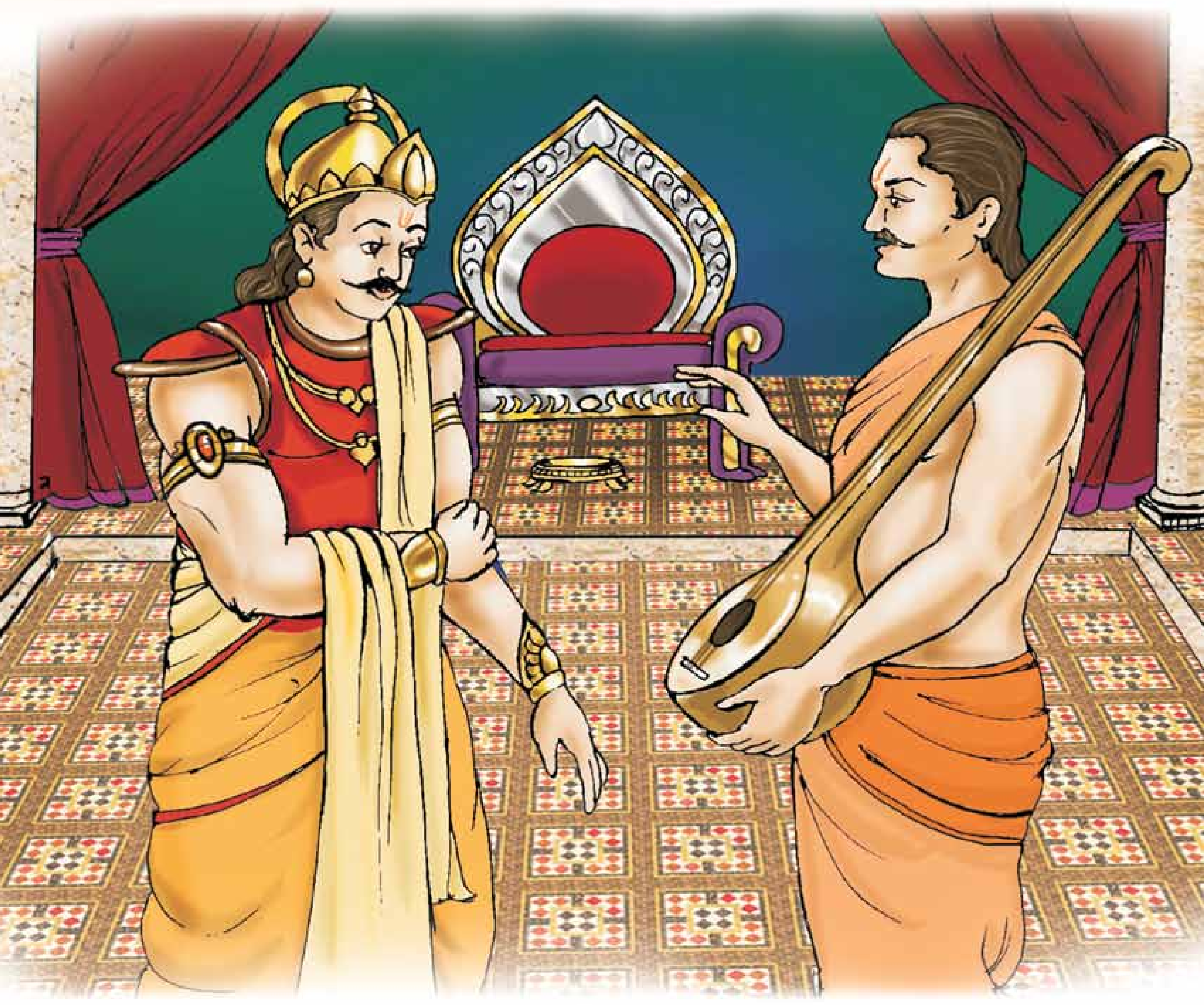

इतिहास मानव पीढ़ियों के सुख-दुःख की घटनाओं का संकलन होता है, जबकि धर्म अनन्त जीवन, शाश्वत शान्ति, परमात्मा का परमधाम प्राप्त कराता है और आनेवाली पीढ़ियों का मार्गदर्शक होता है। जहाँ धर्म है वहीं विजय है– **'यतो धर्मस्ततो जयः।'**

'गीता' मानवमात्र का योगदर्शन है, परमपिता परमात्मा से योग अर्थात् मिलन करानेवाली विद्या है। भगवान् श्रीकृष्ण जानते थे कि सांसारिक युद्ध में जीतनेवालों को भी शाश्वत विजय नहीं मिलती, चाहे वे चक्रवर्ती सम्राट ही क्यों न हों। इसलिये उन्होंने अपने अनन्य सखा-मित्र-शिष्य अर्जुन को माध्यम बनाकर 'गीता' के उपदेश द्वारा शाश्वत विजय का ज्ञान मानवमात्र को प्रदान किया।

महाभारत का प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध कुरुक्षेत्र के मैदान में हुआ था। लगभग छः अरब लोग वीरगति को प्राप्त हुए। विजयी सम्राट युधिष्ठिर को शान्ति नहीं प्राप्त हुई, उन्होंने राजपाट सबकुछ त्यागकर हिमालय की राह पकड़ ली। युद्ध के आरम्भ में प्राप्त 'गीता' का उपदेश उनके मस्तिष्क में गूँज रहा था, वह भजन करने निकल गये।

दुर्योधन का एक भाई युयुत्सु युद्ध आरम्भ होने के पूर्व ही पाण्डव-पक्ष में आ गये थे। महाराजा युधिष्ठिर को वनगमन करते देख बोले– "भैया! कहाँ जा रहे हैं? चक्रवर्ती सम्राटों के इस रत्नजटित सिंहासन पर कौन बैठेगा?" महाराजा युधिष्ठिर ने कहा– "युयुत्सु! इस पर तू बैठ और देख कि इसमें कितना सुख है। आखिर स्वजनों का संहार इसी के लिये तो हुआ।" युयुत्सु ने कहा– "भैया! यह मुझे कदापि नहीं चाहिये।" तब महाराजा युधिष्ठिर ने कहा– "पौत्र परीक्षित कहीं खेलता होगा, उससे कहना, वह बैठेगा तो ठीक अन्यथा छोड़ इसकी चिन्ता। भला नश्वर के लिये कौन आँसू बहाये!" वे गीता के निर्दिष्ट भजन-पथ पर चल पड़े।

इस प्रकार 'महाभारत' आर्यावर्त भारत के इतिहास के साथ-साथ इसके संस्कृति का भी शास्त्र है और इसी के एक अध्याय में संकलित 'श्रीमद्भगवद्गीता' हमारा धर्मशास्त्र है।

* * *

‘महाभारत’ व ‘गीता’ के शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग

आप सभी विद्यार्थियों के ज्ञानवर्द्धन के लिये प्रस्तुत है ‘महाभारत’ व ‘गीता’ के कुछ शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग। ये सभी कथानक, वृत्तान्त और दृष्टान्त पूज्य गुरुदेव श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज के प्रवचनों से संकलित हैं, आपके श्रीमुख की वाणी हैं। आपके रोचक, उपदेशात्मक मुखरित वाणी में ये सारे प्रसंग जीवन्त हो उठते हैं, मनो-मस्तिष्क में चलचित्र की तरह चलने लगते हैं। उनको शब्दशः प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। आशा है, ये शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग आप सभी विद्यार्थियों के शिक्षा एवं साधना में सहायक होंगे। इनका अनुशीलन कर आप अपने जीवन में सुख-शान्ति, स्वास्थ्य, समृद्धि आदि सब कुछ प्राप्त करेंगे।

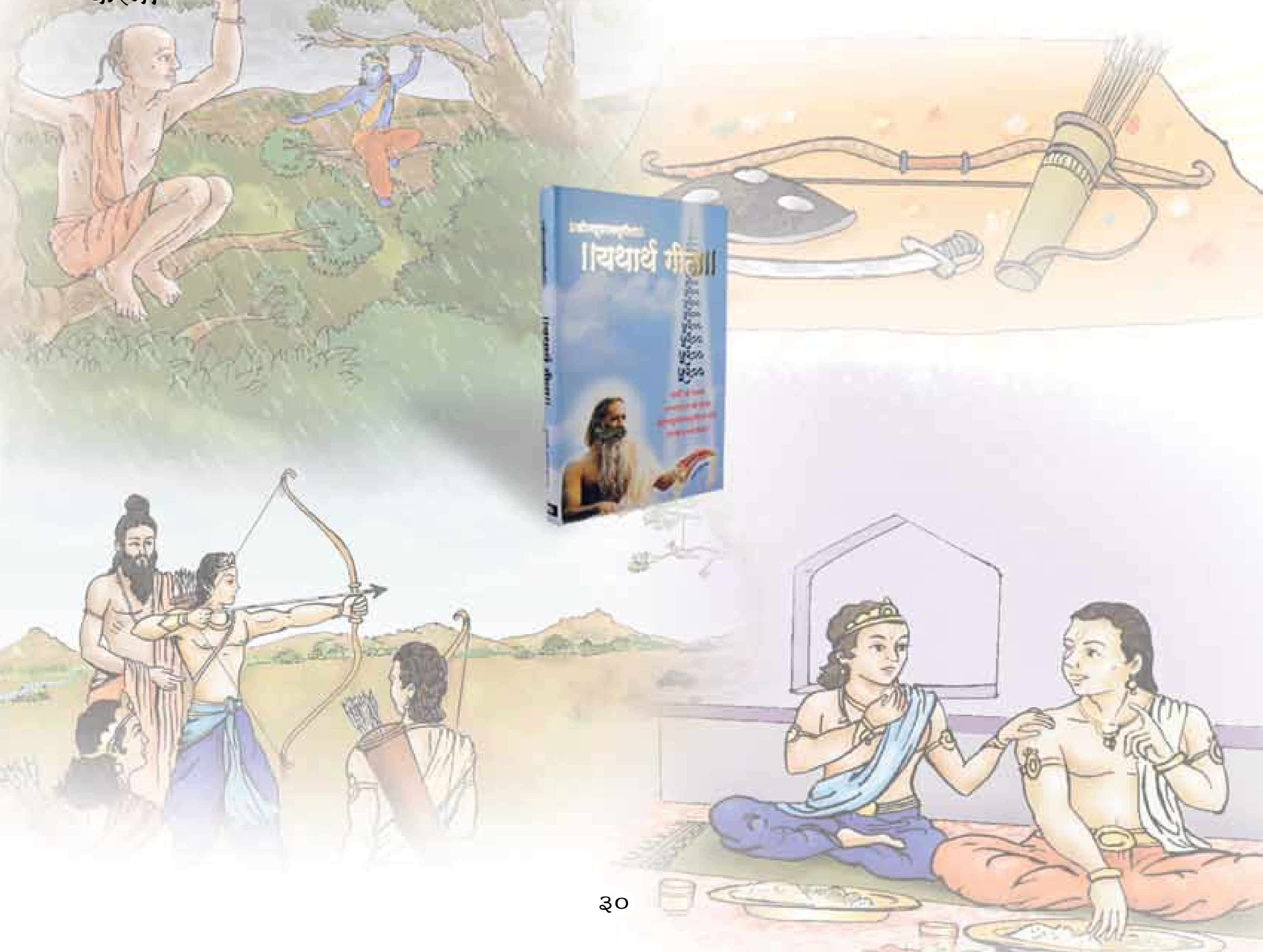

प्रेरक प्रसंग – ९

सफलता का सूत्र
आपका लक्ष्य स्पष्ट हो और इसके लिये सतत् प्रयत्नशील रहें।

एकाग्र होकर, सब ओर से दृष्टि समेटकर एकमात्र लक्ष्य (ध्येय) पर ध्यान केन्द्रित करनेवाला ही सफल होता है। एक बार शस्त्रगुरु द्रोणाचार्य ने एक पक्षी-यन्त्र (कृत्रिम चिड़िया) बनाया और उसे एक वृक्ष पर लटका दिया। उन्होंने सभी शिष्यों से उसकी आँख का निशाना साधने को कहा। गुरु द्रोण क्रमशः शिष्यों का आह्वान करते, कुछेक प्रश्न कर उन्हें लौटा देते। युधिष्ठिर से भी उन्होंने पूछा, ''क्या दिखायी दे रहा है।'' उन्होंने बताया, ''वह विशाल वृक्ष, उसकी शाखाएँ, उसमें बैठा पक्षी और ऊपर अनन्त आकाश!'' गुरु द्रोण ने उनसे भी तीर रख देने को कहा। दुर्योधन से भी यही पूछा, ''क्या दिखायी देता है?'' वह तमककर बोला, ''सब गुरुभाई दिखायी दे रहे हैं, आपको भी देख रहा हूँ और पक्षी को भी देख रहा हूँ, आदेश दें!'' उससे भी बाण रख देने को कहा।

अन्त में अर्जुन की बारी आयी। उससे भी गुरुदेव ने पूछा, ''क्या दिखायी दे रहा है?'' जवाब था, ''गुरुदेव! केवल आँख।'' आदेश मिला, ''चलाओ बाण!'' सन्न से तीर आँख वेधता निकल गया। प्रसन्न आचार्य ने अर्जुन को गले लगा लिया। एक दिन यही छात्र अर्जुन विश्व का अद्वितीय धनुर्धर हुआ।

अतः विद्यार्थी का लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिये और उसकी प्राप्ति के लिये सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिये। ऐसे लोग ही सफल होते हैं।

* * *

प्रेरक प्रसंग – २

शिक्षा में प्रेरणा और लगन का महत्त्व

प्रतिभा प्रत्येक विद्यार्थी में होती है। शिक्षक उनके प्रसुप्त प्रतिभाओं को जागृत करते हैं। प्रेरणा और प्रोत्साहन प्रदान कर सम्भावनाओं के द्वार खोल देते हैं। अपनी लगन के अनुसार ही विद्यार्थी उसे ग्रहण करते हैं। गुरु द्रोणाचार्य ने एक-जैसी ही शिक्षा सभी शिष्यों को दी थी; किन्तु प्रवीण हुए अर्जुन!

वृत्तान्त है–भैया भीम के साथ बैठकर अर्जुन रात्रिकालीन भोजन कर रहे थे। अकस्मात् प्रकाश की व्यवस्था भंग हो गयी। अँधेरा हो गया। अर्जुन घबराये– अब मैं भोजन कैसे करूँगा? किन्तु स्वभाववश हाथ उठा, ग्रास मुँह में चला गया। वह बोले, "भैया! दिखायी तो नहीं देता, फिर भी मेरा हाथ सीधे मुँह में ही जाता है। ऐसा क्यों?" भीम ने कहा, "अभ्यास अर्जुन! अभ्यास! इसका अभ्यास हो गया है; इसलिये भोजन ठोढ़ी या नाक का स्पर्श न कर सीधे मुँह में जाता है।"

बस! अर्जुन को प्रेरणा मिल गयी। वह दिन के उजाले में वटवृक्ष के पत्रों पर निशान बना लेते थे और अर्धरात्रि के घने अँधेरे में उन पर तीर चलाते थे। एक दिन धनुष की टंकार गुरु द्रोण के कानों में पड़ी। उन्होंने देखा, अर्जुन अर्धरात्रि के घने अँधेरे में भी सन्न-सन्न सही लक्ष्यवेध कर रहा है। गुरु द्रोण अवाक्! "अर्जुन! यह विद्या तो हमने नहीं सिखायी।" अर्जुन बोले, "गुरुदेव! शिक्षा तो आपने ही दी थी। हाँ, प्रेरणा भैया भीम के भोजन-वार्ता से मिली।"

लोकोक्ति है– 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' अर्थात् भविष्य में उन्नति करनेवालों के लक्षण पहले से ही दीखने लगते हैं। अर्जुन ऐसा ही विद्यार्थी था। वह विश्व का महान् धनुर्धर बना और महाभारत युद्ध में विजयश्री प्राप्त की।

अतः सभी विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा और लक्ष्यप्राप्ति हेतु लगनशील होना चाहिये। शिक्षा व लक्ष्यप्राप्ति में सहायक पहलू प्रेरणा और दृष्टान्तों के प्रति जागरूक विद्यार्थी ही सफल होता है। विश्व के सभी मनीषियों का भी यही नियम था।

* * *

गृहकार्य (होम वर्क) को हृदयंगम करते हुए पूरा करें

विद्यार्थियों को गृहकार्य देने की परम्परा प्राचीनकाल से ही रही है। एक बार आचार्य ने कौरव-पाण्डव सभी विद्यार्थियों को शिक्षा दी–

१. जो अपकार करता है, उसका भी उपकार करनेवाला महान् होता है।

२. जिसे कहने में भय लगे, उसे भी सच-सच कह देनेवाला महान् होता है।

और आज्ञा दी– इस पाठ को कल याद करके आना।

दूसरे दिन गुरुजी ने पूछा तो सबने बता दिया; किन्तु युधिष्ठिर ने कहा, "गुरुदेव! पाठ याद नहीं हुआ।" लगभग सात दिनों तक यही क्रम चलता रहा। गुरुजी को किञ्चित् क्रोध आ गया। उन्होंने युधिष्ठिर को एक छड़ी मार दी।

युधिष्ठिर कुछ देर तक चुप रहे, फिर बोले, "गुरुदेव! पाठ याद हो गया।"

पहला– अपकार करनेवाले का भी उपकार करनेवाला महान् होता है। गुरुकुल को निर्देश है कि राजकुमारों को छड़ी नहीं लगायी जाय अन्यथा वे बुज़दिल और कायर हो सकते हैं। कदाचित् कोई छड़ी लगा दे तो उसे मृत्युदण्ड दिया जाय। आपने मुझे छड़ी मारी, फिर भी मैंने आपको क्षमा कर दिया।

दूसरा– जिसे कहने में भय लगे, उसे भी सच-सच कह देनेवाला महान् होता है। मुझे भय है कि यदि मैं सच कहता हूँ तो आप मेरी शिक्षा में कटौती कर देंगे, मेरे प्रति आपका ध्यान कम हो जायेगा, फिर भी मैंने सच-सच कह दिया।

गुरुजी ने युधिष्ठिर को गले लगाकर कहा, "बेटा! तुम सच्चे विद्यार्थी हो, एक दिन अवश्य महान् बनोगे।"

कोई पाठ रट लेना ही पर्याप्त नहीं है। पढ़ाई वह है जो हृदयंगम हो जाय अर्थात् हृदय में स्थान पा जाय और आचरण में ढल जाय।

* * *

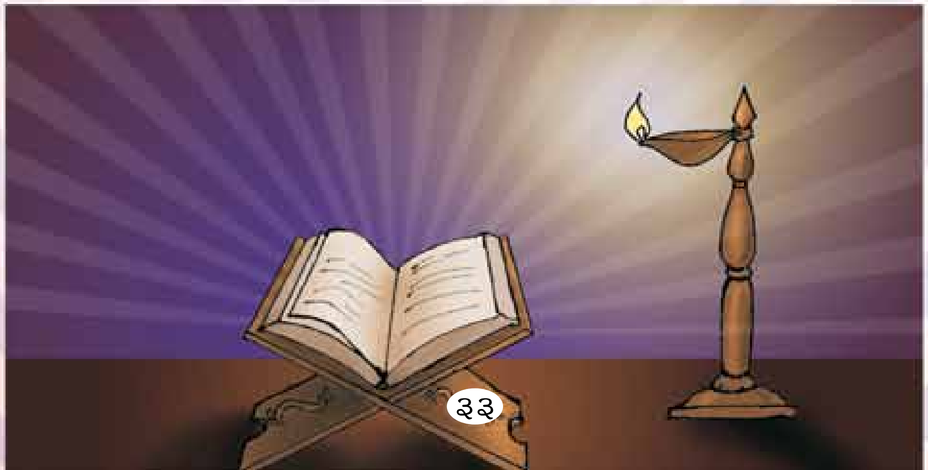

प्रेरक प्रसंग – ४

काल्पनिक भूत-प्रेत का अस्तित्व नहीं, तो डर कैसा ?

'भूत' एक पवित्र एवं यौगिक शब्द है। वेद, उपनिषद् और गीता का शब्द है। भूत माने जीवित प्राणी और प्रेत माने मृत प्राणी।

महाभारत युद्ध के मुहाने पर खड़े मोहग्रस्त अर्जुन को 'गीता' का उपदेश देते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं–

- **ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।** **(गीता, १५/७)**

अर्जुन! इस देह, शरीर में (स्थित) यह जीवात्मा (जीवभूत) मेरा ही सनातन अंश है। अर्थात् हम सब उस परमपिता परमात्मा के अंश हैं, उसकी ही सन्तान हैं; और उतने ही पावन हैं जितने पावन परमात्मा।

- **ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।** **(गीता, १८/६१)**

अर्जुन! वह ईश्वर सभी भूत-प्राणियों के हृदय-देश में निवास करता है। अर्थात् वह ईश्वर सर्वशक्तिमान है, कण-कण में व्याप्त है, ज्योतिर्मय है और सभी भूतों (प्राणियों) के हृदय में निवास करता है।

- **भगवान् को 'भूतनाथ' भी कहा जाता है।** भगवान् सभी प्राणियों (भूतों) के नाथ हैं, स्वामी हैं, प्रभु हैं।

प्रिय विद्यार्थियो! देखा आपने! कितना पावन शब्द है 'भूत'। कालान्तर में इस पवित्र शब्द भूत को प्रेत से जोड़ दिया गया, प्रेत यानि जो मर चुके हैं, उनसे जोड़ दिया गया जिससे एक भय का स्वरूप खड़ा हो गया। इसका मूल आशय ही खो गया। भूत-प्रेत-पिशाच आदि काल्पनिक नाम प्रदान कर और भय से जोड़कर लोगों द्वारा अपने जीने-खाने की व्यवस्था दे दी गयी। दृढ़संकल्पित विद्यार्थियो! जनमानस में व्याप्त इस कुरीति एवं अन्धविश्वास को कदापि न मानें, सहपाठी मित्रों को भी जागरूक करें।

जब भूत-प्रेत का अस्तित्व ही नहीं है, तो इनसे डर कैसा? अभिभावकों से अपेक्षा है कि इस काल्पनिक व्यवस्था में न विश्वास करें, न कभी बच्चों को भूत-प्रेत आदि शब्दों से डरायें और न कभी उन्हें डरने दें। क्योंकि ये डर उनका आजीवन पीछा करते हैं, उनकी प्रगति में बाधक हैं। बच्चों को निर्भीक बनायें, भयभीत तो कदापि न करें।

प्रिय बच्चो! कदाचित् ऐसा कुछ है या कोई अन्य डर-भय है तो इसके लिये 'यथार्थ गीता' को तीन-चार बार पढ़ जायँ। एक परमात्मा में श्रद्धा स्थिर करके उनका स्मरण, ध्यान करें और ॐ का जप करें। अपने गुरुजनों का आदर करें। आप हमेशा-हमेशा के लिये निडर, अभय हो जायेंगे।

* * *

एक परमात्मा की ही पूजा करनी चाहिये

दृष्टान्त है – बालक अर्जुन पितामह भीष्म की गोद में लेटे थे। भीष्म ने कहा, "आज शस्त्र-पूजा होगी।" अर्जुन ने पूछा, "पितामह! शस्त्र कोई भगवान् है जो उसकी पूजा होगी?" पितामह ने कहा, "नहीं पगले! पूजा तो भगवान् की ही होगी, इस उद्देश्य से होगी कि भगवान् मुझे शस्त्र-विद्या में प्रवीण कर दें।"

यह भारतीय संस्कृति है। खेत की जुताई से पहले किसान धरती और हल को प्रणाम करता है। कार्य प्रारम्भ करने से पहले लोहार अपने औजारों को हाथ जोड़ता है। सेठ लोग बही-खातों की पूजा करते हैं, मुंशी लोग कलम-दावात की पूजा करते हैं और विद्यार्थी अपने पुस्तकों को हाथ जोड़ते हैं।

इन सबका आशय है कि उस एक परमात्मा को समर्पित होकर हर कार्य आरम्भ करना। जीवन के हर कार्य-व्यापार में उन प्रभु की याद बनी रहे, यही हमारी संस्कृति है। सः माने वह 'परमात्मा' और कृति माने आपके सम्पूर्ण कार्य। अतः सभी लोगों को एक परमात्मा या इष्ट का स्मरण करते हुए सभी कार्य का प्रारम्भ और समापन करना चाहिये।

* * *

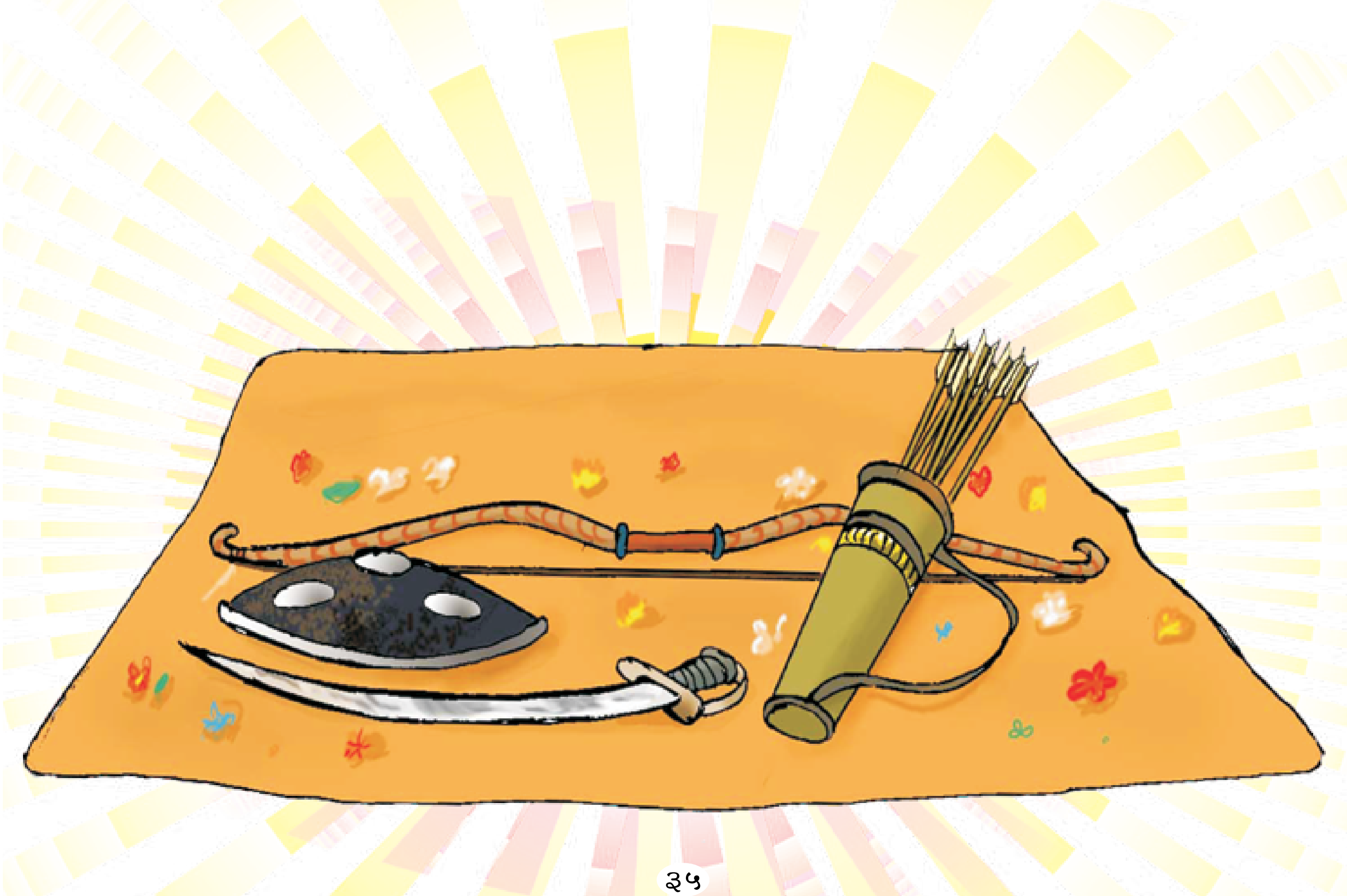

स्वार्थ और झूठ का परिणाम

सभी बच्चों एवं विद्यार्थियों को बचपन से ही अपने में सद्‌गुणों का विकास करना चाहिये। अच्छे आचरण की नींव डालनी चाहिये। स्वार्थ, कपट, झूठ, ईर्ष्या, अभिमान आदि दुर्गुण आजीवन दुःखदायी होते हैं। एक मुट्ठी चने के कपट से सुदामा ने जिन्दगी भर के लिये आपदा मोल ले ली, जबकि वे थे भगवान् श्रीकृष्ण के बालसखा!

दृष्टान्त है– जब भगवान् श्रीकृष्ण अपने अग्रज बलराम के साथ सांदीपनि ऋषि के आश्रम (गुरुकुल) में गये तो सुदामा नामक एक ब्राह्मण बालक (जो पहले से ही वहाँ था) ने उनका स्वागत किया। बोला, "गुरुभाइयो! आपका स्वागत है। इस कुटिया में मैं रहता हूँ, बगल में ही आपका आसन तैयार है।" वह जल ले आया, उन्हें पिलाया और बताया, "गुरुजी बड़े दयालु हैं। गुरुकुल में इतने छात्र रहते हैं। आपलोगों से मिलकर मुझे खुशी हुई। किसी प्रकार की कोई आवश्यकता हो तो कहने में संकोच मत करना, सीनियर जो हूँ।".... यह थी उस समय की रैगिंग अर्थात् परिचय प्राप्त करने की विधा, मेल-जोल बढ़ाने की शैली।

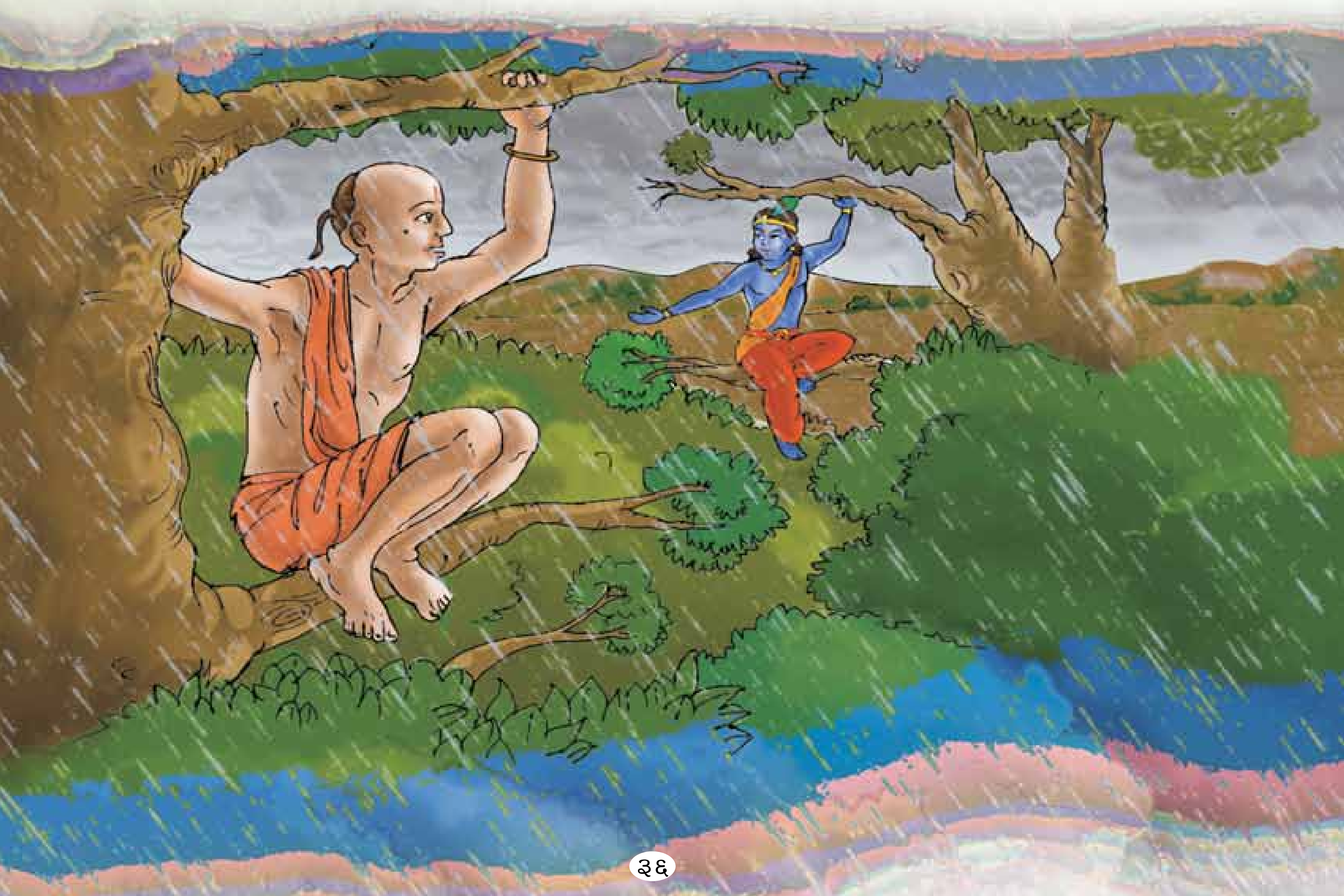

श्रीकृष्ण ने कहा, "सुदामा! आज से तुम हमारे मित्र हुए।" सुदामा ने कहा, "नहीं सखे! हाथ मिलाकर पक्की मित्रता मत करो। तुम ठहरे राजकुमार और मैं गरीब ब्राह्मण! मित्रता तो बराबरवालों में निभती है।" श्रीकृष्ण ने कहा, "सुदामा! मैत्री का हाथ मैंने बढ़ाया है तो निर्वाह भी मैं ही करूँगा।" उन्होंने हाथ मिलाया, गले मिले और मित्र हो गये।

एक बार गुरुमाता ने जंगल से लकड़ियाँ लाने श्रीकृष्ण के साथ सुदामा को भेजा। स्वल्पाहार के लिये दो मुट्ठी चने दिये कि आपस में बाँटकर खा लेना। जंगल में प्रवेश के साथ ही मूसलाधार वृष्टि होने लगी। तूफानी हवा और ठण्डक के दिन! एक वृक्ष पर श्रीकृष्ण और दूसरे पर सुदामा ने आश्रय लिया। सुदामा को भूख लगी तो दो दाना मुँह में डाल लिया। भूख में वह इतना स्वादिष्ट लगा कि अपना हिस्सा खा गये। भूख और जोर पकड़ने लगी तो सोचा, "कुछ और खा लूँ, क्या श्रीकृष्ण ने चने गिन रखे हैं?" एक-एक करके जब चने का अन्तिम दाना मुँह में डाल लिया, तब श्रीकृष्ण ने पूछा, "सुदामा! गुरुमाता ने चने दिये थे।" सुदामा ने कहा, "भैया! मैंने तो दोनों हाथों से पेड़ पकड़ रखा है, लगता है चने कहीं गिर गये।" श्रीकृष्ण ने पूछा, "ये दाँत क्यों किटकिटा रहे हो?" सुदामा बोले, "भैया! दुर्बल ब्राह्मण हूँ, ठण्ड जो लग रही है।" श्रीकृष्ण ने कहा, "ठीक है सुदामा! आज से मेरा एक मुट्ठी चना तुम्हारे ऊपर ऋण रहा।" सुदामा समझ गये, यह जानता है कि मैं खा गया हूँ। गुरुजी ने सुना तो उन्होंने पश्चाताप करते हुए कहा, "सुदामा! तुमने अपने पाँव में कुल्हाड़ी मार ली। ये तो भगवान् के विशुद्ध अंशस्वरूप हैं। हमलोगों को कृतार्थ करने आये हैं।" गुरुकुल प्रवास के सिर्फ चौसठ दिनों में ही श्रीकृष्ण सारी विद्याओं में पारंगत हो गये।

गुरुकुल से विदा होने के बाद श्रीकृष्ण हो गये द्वारिकाधीश! और सुदामा हो गये दरिद्राधीश! दिनभर भिक्षा माँगते फिर भी शाम को भरपेट भोजन नहीं मिल पाता था। बच्चे भी आधा पेट खाकर सो जाते थे।

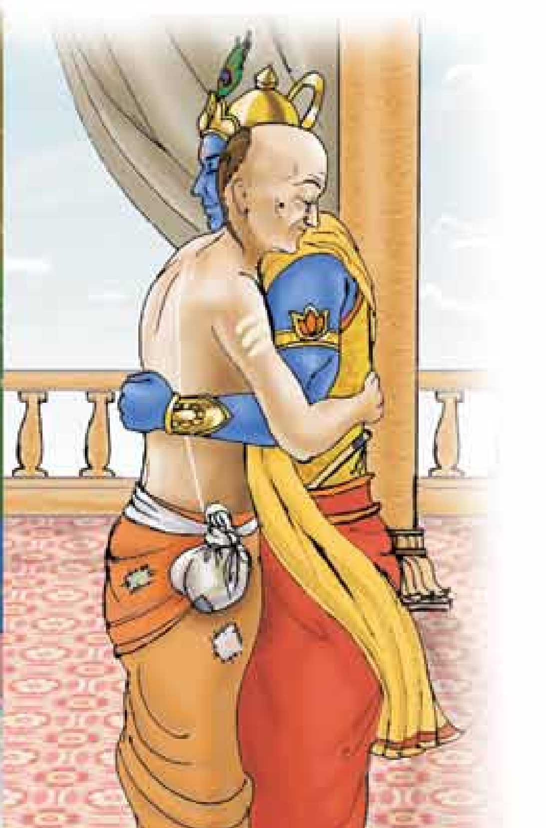

सुदामा की वृद्धावस्था आ गयी और दशा थी– फटी दुपट्टी, हाथ में लकुटी और घिसटती गृहस्थी। पण्डिताइन के बार-बार आग्रह, "अपने बालसखा श्रीकृष्ण से एक बार तो मिल लें! शायद दरिद्रता दूर हो जाय।"

सुदामा चल पड़े द्वारिका की ओर! साथ में थी तीन मुट्ठी चूड़े की पोटली! श्रीकृष्ण वियोग में सुदामा भूखे-प्यासे चलते-चलते पहुँच गये द्वारिका। द्वारपाल से बोले, "भैया! श्रीकृष्ण से बता दें कि बालसखा सुदामा आये हैं।" द्वारपाल ने ऊपर से नीचे तक देखा, "वाह रे बालसखा!" जाकर बताया, "भगवन्! फटी दुपट्टी और हाथ में लकुटी लिये एक कृशकाय ब्राह्मण द्वार पर

खड़ा है। कहता है कि बालसखा श्रीकृष्ण से मिलना है, नाम सुदामा है।'' सुदामा!!....सुनते ही श्रीकृष्ण दौड़ पड़े। कहीं मुकुट छिटक गया, कहीं पीताम्बर गिरा, कहीं बाँसुरी तो कहीं हार! जाकर लेट गये सुदामा के चरणों में। सखा सुदामा को गोद में उठाया, लाकर अपने सिंहासन पर बैठाया। परात के पानी और प्रेमाश्रु के धार से चरणों को पखार डाला।

छप्पनों व्यञ्जनों से सजी थाल आ गयी। बचपन की बातें करते दोनों मित्र लगे एक-दूसरे को खिलाने, पटरानियाँ लगी चँवर डुलाने। इस मित्र-मिलाप में पन्द्रह दिन ऐसे बीत गये जैसे दो दिन। पन्द्रह दिन में ही सुदामा रोआँ झाड़ दिये, स्वस्थ हो गये। सुदामा को अपना घर याद आने लगा; किन्तु बालसखा श्रीकृष्ण के अनुरोध पर पन्द्रह दिन और रुक गये।

विदाई की बेला आ गयी! भव्य रथ पर बैठाकर चक्रवर्ती नरेशों की तरह मित्र सुदामा को नगर का भ्रमण कराया। लेकिन वेशभूषा वही रही– फटी दुपट्टी और हाथ में लकुटी। रुक्मिणीसहित पटरानियाँ चँवर डुला रही थीं, श्रीकृष्ण चरण सहला रहे थे। द्वारिका से दो कोस आगे तक जाकर श्रीकृष्ण ने बालसखा सुदामा को शंखध्वनि के साथ एक महाराजा की तरह विदा किया। राजपरिवार द्वारिका लौट आया।

सुदामा जब अकेले पड़े तो बहुत झल्लाये, ''सुनहली साड़ियों का अम्बार लगा था! चार साड़ी अपनी भाभी को तो दे देता! मेरी दुपट्टी तक नहीं बदली! धन-सम्पदा की तो बात ही छोड़ दो!'' इतने में अपनी पोटली याद आयी, देखा तो तीन मुट्ठी की जगह एक मुट्ठी चूड़ा ही बचा था। सुदामा चिन्तित, ''लो! पट्ठा दो मुट्ठी वो भी खा गया, भूख में तो दो मुट्ठी ही बहुत महत्त्व रखते हैं।'' लगे भुनभुनाने– ये पण्डिताइन ही पीछे पड़ गयी....जाओ! बालसखा से मिल आओ! दरिद्रता दूर हो जायेगी... नहीं तो मैं क्यों जाता? मैं तो बचपन से ही जानता था कि ये छलिया है।

सुदामा का प्रायश्चित पूरा हो चुका था। भुनभुनाते जब वे घर पहुँचे तो घर ही गायब! बोले, ''प्रभु! मेरी झोपड़ी कहाँ गयी?'' दृष्टि घुमायी तो देखा कि एक भव्य महल– ठीक वैसा ही जैसा द्वारिका में था। सुदामा हैरान-परेशान! किसका महल है, इतनी जल्दी कैसे बन गया? लेकिन मेरे बाल-बच्चे कहाँ गये? पण्डिताइन कहाँ है? इतने में वस्त्र-आभूषणों से लदी, सोलहों शृंगार किये पण्डिताइन झरोखे से झाँकी। सुदामा देखते रह गये।.... वही रुक्मिणी जी का वस्त्र-शृंगार, वही कौस्तुभ मणि का गले में हार। हर्षित पण्डिताइन दौड़ी-दौड़ी आयी, सुदामा को गोद में उठाया, महल में ले गयी। अवाक् सुदामा!....वही द्वारिका जैसा भव्य महल, वैसा ही सिंहासन।...वैसे ही झूले में झुलने लगे सुदामा। छप्पनों प्रकार के व्यंजन मिलने लगे। द्वारिकापुरी की तरह सुदामापुरी बस गयी। द्वारिकापुरी तो समुद्र में समा गयी, लेकिन सुदामापुरी के अवशेष आज भी दर्शनीय हैं।

गुरुकुल में दिये वचन– “सुदामा! मैत्री का हाथ मैंने बढ़ाया है तो निर्वाह भी मैं ही करूँगा।” भगवान् श्रीकृष्ण ने उन्हें सबकुछ दिया– वैसा ही दिया जैसा द्वारिका में था। इसलिये हमें सतत् सावधान रहना चाहिये। पता नहीं हमारे मध्य कौन! भगवान् का स्वरूप विराजमान है। ऐसा न हो कि हम भी सुदामा की तरह भूल या गलती कर जायँ।

अतः भगवान् जब अपनाते हैं, कृपा करते हैं तो अपनी भगवत्ता ही दे देते हैं। जैसे भगवान्, वैसा ही उनका अनन्य भक्त! इसलिये भगवान्, इष्ट या सद्गुरु के शरण में जायँ तो अनन्य श्रद्धा और भक्ति के साथ। मन में स्वार्थ, छल, कपट, झूठ, अभिमान तो कदापि न हो। भगवान् का कहना है–

निर्मल मन जन सो मोहिं पावा।
मोहिं कपट छल छिद्र न भावा।।

* * *

॥ भगवानुवाच ॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

- गीता, ९/२२

अनन्य भाव से मुझमें स्थित भक्तजन मुझ परमात्मस्वरूप का निरन्तर चिन्तन करते हैं, 'पर्युपासते'– लेशमात्र भी त्रुटि न रखकर मुझे उपासते हैं। उन नित्य एकीभाव से संयुक्त हुए पुरुषों का योगक्षेम मैं स्वयं वहन करता हूँ अर्थात् उनके योग की सुरक्षा की सारी जिम्मेदारी मैं अपने हाथ में लेता हूँ। इतना होने पर भी लोग अन्य देवताओं को भजते हैं।

- **सृष्टि** के प्रारम्भ से प्रसारित अविनाशीयोग - **गीता** ही मानवमात्र का **आदि धर्मशास्त्र** है।
- **गीता** - सम्प्रदाय, मजहब व भेदभाव **मुक्त** धर्मशास्त्र है। यह आपको स्वर्ग-नर्क के द्वन्द में न फंसाते हुए ईश्वरदर्शन और ईश्वरत्व कि प्राप्ति कराती है।
- **यथार्थ गीता** - ईश्वरीय प्रेरणा से वर्ष १९८३ में प्रकट 'यथार्थ गीता' ५२०० वर्षों बाद **श्रीकृष्ण के** आशय का यथावत् पुनर्प्रकाशन है; जो उन्हीं की अन्तःप्रेरणा से लिखी गयी है।

- स्वामी श्री अड़गड़ानन्द महाराज जी - यथार्थ गीता के प्रणेता

श्री परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्दजी आश्रम ट्रस्ट

5, New Apollo Estate, Mogra Lane, Opp. Nagardas Road,
Andheri (East), Mumbai – 400069 India
Telephone : (022) 2825300

ई-मेल - contact@yatharthgeeta.com

वेबसाइट - www.yatharthgeeta.com